

राजगढ़ में तालाब में गिरी कार, 5 दोस्तों की मौत

20 मिनट बाद क्रेन से निकाली गाड़ी, कांच तोड़कर निकाले शव , खाटू श्याम जा रहे थे

राजगढ़ (भोपाल) (नप्र)। मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले में शनिवार सुबह सड़क हादसे में 5 दोस्तों की मौत हो गई। शाजापुर से राजस्थान के खाटू श्याम मंदिर के दर्शन के लिए जा रही कार भीलखंडी ज़ोडू के पास अनियंत्रित होकर सड़क किनारे तालाब में जा गिरी। देखते ही देखते कार पूरी तरह पानी में डूब गई। हादसे के बाद स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। क्रेन बुलाकर करीब 20 मिनट बाद तालाब से कार को बाहर निकाला गया। इसके बाद कार के कांच तोड़कर अंदर फंसे लोगों को बाहर निकाला



गया, लेकिन तब तक पांचों की मौत हो चुकी थी। हादसा सुबह करीब 8 बजे हुआ। तेज रफ्तार से हादसे की आशंका- प्रारंभिक जांच में हादसे की वजह तेज रफ्तार के कारण कार का अनियंत्रित होना मानी जा रही है। पुलिस ने एहतियातन तालाब में सर्च ऑपरेशन भी चलाया, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कार में कोई अन्य व्यक्ति सवार नहीं था। खुजनेर थाना प्रभारी रवि ठाकूर ने बताया कि सभी शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है।

खाटू श्याम दर्शन के लिए निकले थे

पुलिस के मुताबिक, सभी मृतक शाजापुर जिले के अरंडिया और अरंडिया खुर्द गांव के रहने वाले थे। शनिवार सुबह वे एक ही कार से राजस्थान स्थित खाटू श्याम मंदिर के दर्शन के लिए निकले थे, लेकिन राजगढ़ पहुंचने से पहले ही हादसे का शिकार हो गए। मृतकों में गोविंद तिवारी और कमल किशोर तिवारी आपस में चचेरे भाई थे।

इन 5 लोगों की हुई मौत

गोविंद तिवारी (55), निवासी अरंडिया खुर्द। कमल किशोर तिवारी (57-58), निवासी अरंडिया खुर्द। शंकर नाथ (58), निवासी अरंडिया खुर्द। अरविंद वर्मा (50), निवासी अरंडिया। रोहित पटेल (40-42), निवासी अरंडिया अरविंद बस कंडक्टर थे, दो बेटे हैं मृतक अरविंद वर्मा विवाहित थे। उनके दो बेटे हैं। वे निजी बस में कंडक्टर के रूप में काम करते थे। परिवार के मुताबिक, करीब चार साल पहले उनके छोटे भाई की भी पेड़ से गिरने से मौत हो गई थी।

भोपाल समेत देशभर में गौ सम्मान आह्वान अभियान

27 जुलाई को सरकार को सौंपेगे ज्ञापन, गाय को सम्मान समेत देशभर में गौ-हत्या रोकने की मांग

भोपाल (नप्र)। भोपाल समेत देशभर में गौहत्या रोकने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत भोपाल में भी 27 जुलाई (सोमवार) को प्रशासन को ज्ञापन सौंपा जाएगा। अभियान में गाय को सम्मान दिलाने की बात कही गई है। कार्यक्रम के प्रभारी श्रीराम शर्मा ने बताया कि यह अभियान का दूसरा चरण है। इसके तहत जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल और मुख्यमंत्री तक ज्ञापन भेजा जाएगा। इसके अलावा भोपाल जिले से अकेले 2 लाख से अधिक हस्ताक्षर और एक प्राथना पत्र भी भेजा जाएगा। कार्यक्रम के तहत सोमवार सुबह बजे सभी कालीघाट के पास गौ भक्त गुफा मंदिर पर एकत्रित होंगे। गौमाता का पूजन और शंखनाद होगा, इसके बाद 9.15 बजे तक श्री राम जय राम जय जय राम विजय मंत्र का सामूहिक जप होगा। इसके बाद झंडे-बैनर लेकर भव्य प्रार्थना-यात्रा जिलाधिकारी कार्यालय तक निकाली जाएगी, जिसमें गौमाता की झांकी और बुलडोजर पर हस्ताक्षरों का प्रदर्शन भी शामिल रहेगा। संत-महात्मा, सामाजिक-धार्मिक संगठन, किसान और बड़ी संख्या में गौभक्त इसमें शामिल होंगे।

संक्षिप्त समाचार

क्रिकेटर आकाशदीप मुकेश बने डीएसपी

- सीएम के पैर छुए, सम्राट बोले- अगले आईपीएल ऑक्शन में बिहार की टीम भी रहेगी

पटना (एजेंसी)। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय लेवल पर मेडल जीतने वाले 19 खिलाड़ियों को सरकारी नौकरी का जॉइनिंग लेटर दिया। इनमें भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज आकाशदीप और मुकेश कुमार को पुलिस उपाधीक्षक और एथलेटिक्स खिलाड़ी पीयूष राज को पुलिस अवर निरीक्षक पद पर नियुक्ति दी गई। वहीं आकाशदीप और मुकेश कुमार ने पैर छूकर मुख्यमंत्री से आशीर्वाद लिया। ऊर्जा ऑडिटोरियम में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस साल 106 खिलाड़ियों को लेटर पहले ही दिए जा चुके हैं। इस योजना में नियुक्ति-पत्र, खेल छत्रवृत्ति चपन-पत्र और खेल सम्मान राशि दी गई। 119 उत्कृष्ट खिलाड़ियों को नियुक्तिपत्र मिला है।

प्रादेशिक लोकभाषा गोष्ठी आज

भोपाल। मध्यप्रदेश लेखक संघ की प्रादेशिक गोष्ठियों की श्रृंखला के अंतर्गत 26 जुलाई को लोकभाषा गद्य/पद्य गोष्ठी का आयोजन किया गया है। दुष्यन्त कुमार संग्रहालय में दोपहर 2 बजे प्रारंभ होने वाली इस गोष्ठी में प्रदेश की लोकभाषा के अनेक रचनाकार अपनी रचनाओं का पाठ करेंगे। गोष्ठी में विनोद मिश्र सुरमणि, राजेश तिवारी, महेन्द्र भट्ट, आशा पाण्डेय, सुनील त्रिपाठी निराला (बुंदेली), विक्रम विवेक, संगीता तलेरा, मंगीलाल कुलश्रेष्ठ (मालवी), निर्मल शर्मा, छेगालाल कुमारवत (निमाड़ी) और सत्यदेव सोनी (बघेली) को रचनापाठ हेतु आमंत्रित किया गया है। इस कार्यक्रम के मुख्यअतिथि बुंदेली के वरिष्ठ कवि डॉ किशन तिवारी होंगे और लेखक संघ के अध्यक्ष राजेन्द्र गढ़ानी कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे, जबकि कैलाश गुप्ता सुमन सारस्वत अतिथि होंगे।

सीजेपी प्रोटेस्ट को मुंबई में मिला बड़ा समर्थन

- राज ठाकरे ने तिरंगा मार्च से पहले किया बड़ा ऐलान, सीएम समेत वीआईपी की सुरक्षा बढ़ी

मुंबई (एजेंसी)। दिल्ली में कांकरोच जनता पार्टी के संसद मार्च में हुए लाठीचार्ज और पुलिस से झड़प के बाद छात्रों का आंदोलन देशव्यापी हो गया है। जंतर-मंतर पर जेठ का जमावड़ा है तो वहीं दूसरी आर्थिक राजधानी मुंबई में दादर-शिवाजी पार्क का एरिया जंतर मंतर- 2 बन गया है। शुक्रवार को तिरंगा यात्रा में बड़ी संख्या में युवा यहां पहुंचे। सीजेपी प्रोटेस्ट के समर्थन में जुटे युवाओं के हाथों



में स्लोगन और पोस्टर थे। जो पीएम मोदी पर केंद्रित थे। इनमें एक पोस्टर ने सभी का ध्यान खींचा इसमें लिखा था कि हमें न्यायवाला चाहिए, गाय वाला नहीं, लेकिन राज ठाकरे ने तिरंगा मार्च से 26 जुलाई को शिवसेना और मनसे की ओर से आयोजित संयुक्त मार्च गैर-राजनीतिक होगा। इसमें किसी भी पार्टी का झंडा नहीं होगा और नारे सिर्फ सरकार की कार्रवाई की निंदा करने और छात्रों के समर्थन में ही लगाए जाएंगे। प्रोटेस्ट में पहुंचे उद्धव ठाकरे के बेटे आदित्य ठाकरे ने अभिजीत दिपके से फोन पर चर्चा की। इस मौके पर राज ठाकरे के बेटे अमित ठाकरे भी मौजूद रहे। दिल्ली के बाद मुंबई में सीजेपी के समर्थन में हुए प्रदर्शन ने सबसे ज्यादा ध्यान खींचा।

हिमाचल-गोवा से ज्यादा एमपी में बढ़े देशी पर्यटक

‘देश का दिल’ देखने रोज आ रहे 500 विदेशी और 3.82 लाख देशी पर्यटक

भोपाल (नप्र)। दशकों से देश-विदेश के पर्यटकों की पहली पसंद रहे गोवा और हिमाचल प्रदेश जैसे पारंपरिक पर्यटन स्थलों की तुलना में अब ‘हाट ऑफ इंडिया’ मध्य प्रदेश ने देश के पर्यटन मानचित्र पर पर्यटकों की पसंद बन रहा है।

साल 2025 के आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि जहां हिमाचल प्रदेश में घरेलू पर्यटकों की संख्या में गिरावट आई है और गोवा में पर्यटकों की संख्या भी सीमित रही है, वहीं मध्य प्रदेश में पर्यटकों ने नया इतिहास रच दिया।

वर्ष 2025 के दौरान मध्य प्रदेश में रोजाना औसतन 3.82 लाख से अधिक देशी और करीब 500 विदेशी सैलानी पहुंचे, जिसके दम पर राज्य पूरे साल में करीब 14 करोड़ पर्यटकों की मेजबानी करने में सफल रहा।

हिमाचल प्रदेश-गोवा जैसे राज्य में घटे टूरिस्ट- राज्यसभा में पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शंखावत द्वारा दिए गए जवाब के अनुसार, हिमाचल प्रदेश में वर्ष 2024 की तुलना में वर्ष 2025 में घरेलू पर्यटकों की संख्या में गिरावट दर्ज की गई है। हिमाचल में जहां वर्ष 2024 में 1.80 करोड़ से अधिक देशी पर्यटक आए थे,



वहीं वर्ष 2025 में यह आंकड़ा घटकर 1.44 करोड़ रह गया।

दूसरी ओर, समुद्री तटों के लिए मशहूर गोवा वर्ष 2025 में कुल मिलाकर केवल

1.03 करोड़ घरेलू पर्यटकों को ही आकर्षित कर सका। इनकी तुलना में मध्य प्रदेश ने जबरदस्त वृद्धि दिखाते हुए वर्ष 2021 के 2.55 करोड़ घरेलू पर्यटकों के आंकड़े को वर्ष

2025 में 13.95 करोड़ तक पहुंचा दिया। यह आंकड़ा दिखाता है कि पर्यटक अब केवल पहाड़ों या समुद्र तटों तक सीमित न रहकर मध्य प्रदेश के समृद्ध इतिहास, वन्यजीव अभयारण्यों और आध्यात्मिक स्थलों का रुख कर रहे हैं।

5 सालों में एमपी में देशी पर्यटक 446 प्रतिशत बढ़े- मध्य प्रदेश में पर्यटन विकास की गति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पिछले पांच सालों (2021 से 2025) में राज्य में घरेलू पर्यटकों की संख्या में 446 प्रतिशत से अधिक की जबरदस्त बढ़ोतरी दर्ज की गई है। वर्ष 2025 में मध्य प्रदेश में कुल 13,95,96,049 घरेलू पर्यटक और 1,81,743 विदेशी पर्यटक पहुंचे।

यदि दैनिक औसत के हिसाब से देखें तो राज्य में हर रोज औसतन 3,82,455 देशी और 498 विदेशी सैलानियों ने दस्तक दी। मध्य प्रदेश के प्रमुख धार्मिक स्थल, राष्ट्रीय उद्यान और ऐतिहासिक धरोहरें पर्यटकों की इस भारी आमद का मुख्य केंद्र बनी हुई हैं, जिससे राज्य देश के शीर्ष पर्यटन राज्यों की सूची में 9वें स्थान पर मजबूती से टिका हुआ है।

हिमाचल प्रदेश में

पर्यटकों की संख्या घटी

प्राकृतिक आपदाओं, भूस्खलन और बदलते मौसम के मिजाज के बीच हिमाचल प्रदेश के पर्यटन ग्राफ को वर्ष 2025 में झटका लगा है। संसद में पेश आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2024 में हिमाचल प्रदेश ने 1,80,41,929 घरेलू पर्यटकों की मेजबानी की थी, लेकिन वर्ष 2025 में यह संख्या घटकर 1,44,11,327 पर आ गई।

यानी महज एक साल के भीतर हिमाचल में करीब 36 लाख घरेलू पर्यटक कम हो गए। हालांकि, विदेशी पर्यटकों के मामले में राज्य में मामूली बढ़ोतरी देखी गई और यह संख्या वर्ष 2024 के 82,765 से बढ़कर 2025 में 84,828 तक पहुंची, लेकिन घरेलू पर्यटकों की भारी गिरावट ने राज्य के कुल पर्यटन ग्राफ को प्रभावित किया।

भारत ने स्वदेशी काउंटर-ड्रोन सिस्टम का कर लिया ट्रायल

- सेना के कम्युनिकेशन नेटवर्क से जुड़ सकता है मार्गवास्त्र

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना के सामने सोलर ड्रिफ्ट एंड एयरोस्पेस लिमिटेड ने नागपुर में अपने स्वदेशी काउंटर-ड्रोन सिस्टम भार्गवास्त्र का सफल लाइव ट्रायल किया। कंपनी का दावा है कि यह



सिस्टम हवाई हमलों और ड्रोन स्वाम (ड्रोन के झुंड) जैसे बढ़ते खतरों से निपटने के लिए तैयार है। इसे सेना के कमांड और कम्युनिकेशन नेटवर्क से भी जोड़ा जा सकता है। मौजूदा जानकारी के मुताबिक, यह

सिस्टम खतरनाक ड्रोन और खुद से उड़ने वाले ड्रोन के झुंड को रोकने के लिए बनाया गया है। इनपुट में ट्रायल की तारीख और सेना की ओर से आधिकारिक प्रतिक्रिया की जानकारी नहीं दी गई है। यह जानकारी अभी सामने नहीं आई है। कंपनी के मुताबिक ट्रायल सफल रहा। भार्गवास्त्र को गाड़ी पर आसानी से लगाया जा सकता है। इससे जरूरत पड़ने पर इसे तेजी से एक जगह से दूसरी जगह ले जाकर तैनात किया जा सकता है। कंपनी का कहना है कि इससे अलग-अलग इलाकों में तुरंत ऑपरेशन करना आसान होगा।

यूपी-बिहार में प्रदर्शन के दौरान हिंसा, फायरिंग-पथराव

- 15 घायल, दो एसपी भी चोटिल, जश्न मना रहे स्टूडेंट्स
- आरा में रेलवे ट्रैक पर प्रदर्शनकारी, प्रयागराज में झड़प

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट पेपर लीक मामले और लाठीचार्ज के खिलाफ छात्रों का प्रदर्शन देशभर में शुक्रवार को भी प्रदर्शन जारी रहा। बिहार में बंद आयोजित किया गया। इस दौरान पटना और सीवान सहित 8 जिलों में छात्रों ने पुलिस पर पथराव किया। पथराव में सीवान में पथराव से एसपी घायल हो गए। इसके बाद पुलिस ने आंसू गैस के गोले दागे और करीब 10 राउंड फायरिंग की। सीतामढ़ी में भी पथराव हुआ। एसपी समेत 12 लोग घायल हो गए।

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज, लखनऊ और सहारनपुर समेत कई शहरों में प्रदर्शन हो रहे हैं। प्रयागराज में 10 हजार लोग



सड़कों पर प्रदर्शन कर रहे हैं। बिहार बंद के दौरान सीवान में 10 राउंड फायरिंग- नीट पेपर लीक और लाठीचार्ज के खिलाफ बुलाया गया बिहार बंद अब हिंसक होता जा रहा है। सीवान

में प्रदर्शनकारियों ने जमकर पत्थरबाजी की, पुलिस पर हमला किया। भीड़ को हटाने के लिए पुलिस ने पहले आंसू गैस के गोले दागे गए। 10 राउंड से ज्यादा सीधे फायरिंग हुई है।

धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे से एमपी के स्टूडेंट्स भी खुश

केद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की खबर आते ही इंदौर में 25 दिन से आंदोलन कर रहे छात्रों के बीच जश्न का माहौल बन गया। टट्टया भील चौराहे पर डटे युवाओं और विद्यार्थियों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर जीत की खुशी जताई। इस दौरान माहौल पूरी तरह देशभक्ति के रंग में रंगा नजर आया। छात्रों ने हाथों में तिरंगा लहराते हुए देशभक्ति के गीतों पर जमकर डांस किया और छात्र एकता जिंदाबाद के नारे लगाए। प्रदर्शनकारी छात्रों का कहना है कि यह उनके लंबे संघर्ष और एकजुटता की जीत है। हालांकि परीक्षा प्रणाली में पूरी पारदर्शिता और सुधार की उनकी मुख्य मांगें पूरी होने तक यह लड़ाई जारी रहेगी।

राजनीति का उद्देश्य समाज कल्याण

नई पीढ़ी को पूर्व मुख्यमंत्री स्व. गोविन्द नारायण सिंह से सेवा और समर्पण की लेनी चाहिए सीख: सीएम डॉ. यादव

- पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्री सिंह की जयंती पर किया नमन
- मध्यप्रदेश विधानसभा के सेंट्रल हॉल में अर्पित की पुष्पांजलि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. गोविंद नारायण सिंह की जयंती पर शनिवार को मध्यप्रदेश विधानसभा के सेंट्रल हॉल में उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। पुष्पांजलि कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, अन्य जनप्रतिनिधिगण एवं पूर्व मुख्यमंत्री स्व. सिंह के परिजन उपस्थित थे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राजनीति का उद्देश्य केवल सत्ता पाना नहीं, समाज का कल्याण करना है। आज की नई पीढ़ी को पूर्व मुख्यमंत्री स्व. गोविंद नारायण सिंह के जीवन से सेवा, समर्पण और नैतिकता की सीख लेनी चाहिए। वे बेहद सरल जीवन और सहज व्यवहार के लिए प्रसिद्ध थे। जनता से उनका सीधा संवाद उनकी सबसे बड़ी शक्ति था। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों और सामान्य नागरिकों की समस्याओं को निकट से समझा। ऐसे व्यक्तित्व सदैव समाज का मार्गदर्शन करते हैं। उनकी कार्यशैली आज भी जनप्रतिनिधियों



फोटो प्रवीण वाजपेई

के लिए प्रेरणास्रोत है। पूर्व मुख्यमंत्री स्व. सिंह का जीवन युवाओं को ईमानदारी, संघर्ष और राष्ट्र सेवा का संदेश देता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि श्री गोविन्द नारायण सिंह वर्ष 1967 में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री बने, जब प्रदेश की राजनीति एक नए दौर से गुजर रही थी। उन्होंने प्रशासन में जवाबदेही और जनहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का प्रयास किया। लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत बनाने और जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप शासन चलाने की दिशा में कार्य किया। उनका कार्यकाल राजनीतिक

परिवर्तन का महत्वपूर्ण प्रतीक माना जाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज पूर्व मुख्यमंत्री स्व. सिंह की जयंती पर हम सभी उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लें। उनके दिखाए मार्ग पर चलते हुए हम विकसित, समृद्ध और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण के लिए कार्य करेंगे। प्रदेश में जनकल्याण, सुशासन और सतत् विकास के मार्ग पर लगातार आगे बढ़ना ही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। पूर्व मुख्यमंत्री स्व. गोविंद नारायण सिंह का जन्म 25 जुलाई 1920 को रामपुर बघेलान में हुआ

था। एम.ए., एलएलबी. तक शिक्षा ग्रहण कर उन्होंने अपने सार्वजनिक एवं राजनैतिक जीवन प्रारंभ किया। उन्होंने चतुर्थ विधानसभा (1967-1972) में 30 जुलाई 1967 से 12 मार्च 1969 तक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में प्रदेश के विकास को एक नई दिशा दी थी। श्री सिंह का 10 मई 2005 को देहांत हुआ। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुष्पांजलि कार्यक्रम के पश्चात मीडिया प्रतिनिधियों से चर्चा में कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री स्व. गोविंद नारायण सिंह राज्य में तत्कालीन संविद सरकार की राजनीति के केंद्र बिंदु थे। वे रीवा के निवासी थे। उन्होंने सादगी, निष्पक्षता के साथ समाज सेवा के क्षेत्र में विशेष पहचान बनाई थी। पूर्व मुख्यमंत्री श्री सिंह ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। आज उनकी जयंती के अवसर पर हम सभी उनका स्मरण कर रहे हैं। श्री सिंह ने राजमाता सिंधिया के कार्यकाल में जनता की अवाज बनकर यह भरोसा दिलाया था कि पक्ष हो या विपक्ष, अब राजनीति में बदलाव का समय है। पूर्व मुख्यमंत्री स्व. सिंह प्रदेश की राजनीति में लोकतांत्रिक परंपरा की मिसाल बने। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारे विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री और पूर्व विधानसभा अध्यक्षों की जयंती और पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि कार्यक्रम कराने की उत्कृष्ट पहल की है।

मप्र में 90 हजार अतिथि शिक्षकों के लिए बड़ा फैसला

अब एक साल में 10 सीएल पाएंगे अतिथि शिक्षक, जल्द जारी होंगे आदेश



भोपाल (नप्र)। प्रदेश के अतिथि शिक्षकों की री-जॉइनिंग में 90 प्रतिशत ई-अटेंडेंस से राहत देने के बाद स्कूल शिक्षा विभाग ने अब इनके अवकाश को लेकर बड़ा फैसला लिया है। अब स्कूल शिक्षा विभाग में कार्यरत 90 हजार अतिथि शिक्षकों को आकस्मिक अवकाश की सुविधा मिलेगी।

हर अतिथि शिक्षक को अब साल भर में दस सीएल यानी आकस्मिक अवकाश मिलेंगे। अब तक एक भी अवकाश अतिथि शिक्षकों को नहीं मिलते थे। स्कूल शिक्षा मंत्री ने कहा है कि विभाग जल्दी ही इसके आदेश जारी करेगा। स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह ने कहा है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से चर्चा के बाद प्रदेश के अतिथि शिक्षकों के हित में स्कूल शिक्षा विभाग का एक और महत्वपूर्ण निर्णय हुआ है। सिंह के अनुसार, अतिथि शिक्षकों को उनकी कार्य-

शुक्रवार को री-जॉइनिंग में 90 प्रतिशत अटेंडेंस की बाध्यता से छूट दी थी

इसके पहले शुक्रवार को जारी आदेश में स्कूलों में पढ़ाने वाले प्रदेश के पांच हजार ऐसे शिक्षकों के हित में लोक शिक्षण आयुक्त ने फैसला लिया था कि जिनकी ई-अटेंडेंस 90 प्रतिशत नहीं होने के कारण इस शिक्षा सत्र में विद्यालय में री-जॉइन नहीं हो पा रही थी, ऐसे शिक्षकों को री-जॉइन के लिए 90 प्रतिशत अटेंडेंस से छूट दी जाएगी। इसके बाद अब शिक्षक विद्यालयों में री-जॉइन कर सकेंगे, लेकिन इसके बाद उन्हें लगातार ई-अटेंडेंस लगानी ही होगी। इस आदेश में लोक शिक्षण आयुक्त अभिषेक सिंह ने सभी संयुक्त संचालक, जिला शिक्षा अधिकारी, विकासखंड शिक्षा अधिकारी और संकुल प्राचार्य, हयर सेकेंडरी व हाई स्कूल को दिए निर्देश में कहा है कि 30 जून 2026 को जारी आदेश में री-जॉइनिंग के लिए 90 प्रतिशत ई-अटेंडेंस अनिवार्य की गई थी।

सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार ने सत्र के दौरान कुल 10 आकस्मिक अवकाश (सीएल) प्रदान करने का निर्णय लिया है। अतिथि शिक्षकों को कार्यभार ग्रहण करते ही 1 दिवस की छुट्टीप्राप्ति होगी। साथ ही हर 30 दिवस का कार्य पूर्ण होने पर 1 अतिरिक्त छुट्टीअर्जित होगी। अतिथि शिक्षक सत्र के दौरान

उपलब्ध अवकाश में से एक बार में अधिकतम 3 सीएल ले सकेंगे। उन्होंने कहा कि स्कूल शिक्षा विभाग प्रदेश के शिक्षकों के हितों की रक्षा और उनके कार्य परिवेश को बेहतर बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। इस संबंध में आवश्यक आदेश जारी करने के लिए विभाग को निर्देशित किया गया है।

अतिथि शिक्षकों के संगठन के साथ बैठक के बाद नरम हुआ विभाग

अतिथि शिक्षक समन्वय समिति के प्रदेश अध्यक्ष सुनील सिंह परिहार के नेतृत्व में पिछले दिनों लोक शिक्षण आयुक्त के साथ बैठक हुई थी। इसमें बताया गया था कि पूरे सत्र के दौरान अतिथि शिक्षकों को कोई अवकाश नहीं मिलता है। साथ ही गंभीर बीमारी से पीड़ित, मातृत्व अवकाश, परिवार में आकस्मिक मृत्यु, नेटवर्क की अनुपलब्धता, तकनीकी कारण, किसी प्रतियोगी शैक्षणिक परीक्षा या स्वयं की शादी के कारण जिनकी 90 प्रतिशत से कम उपस्थिति है, उन्हें मानवीयता के आधार पर रियायत देने की मांग की गई थी। इसके बाद आयुक्त ने पहले री-जॉइनिंग और फिर सीएल अवकाश की राहत दी है।

भोपाल, इंदौर समेत 35 जिलों में बारिश का अलर्ट

4 दिन ऐसा ही रहेगा सिस्टम, एमपी में अब तक 13 इंच बरसात, कोटे की 35 फीसदी पूरी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में मानसून पूरी तरह सक्रिय है। इसी वजह से प्रदेश के 35 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया गया है, जबकि 20 जिलों में हल्की से मध्यम बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग ने अगले चार दिन तक कई जिलों में भारी से अति भारी बारिश की चेतावनी दी है। अब तक प्रदेश में औसतन 13 इंच बारिश हो चुकी है, जो पूरे मानसून के कोटे का करीब 35 प्रतिशत है।

अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से मिल रही नमी- मौसम विशेषज्ञ शैलेंद्र कुमार नायक के मुताबिक, दक्षिण-पश्चिम मानसून पूरे प्रदेश में सक्रिय है। अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से लगातार नमी मिलने के साथ मानसून ट्रफ भी मध्यप्रदेश से गुजर रही है। इससे हवा में नमी 80 से 95 प्रतिशत तक बनी हुई है और कई इलाकों में भारी बारिश के हालात बन रहे हैं।

इन जिलों में भारी बारिश का अलर्ट- भोपाल, रायसेन, सोहोरा, राजगढ़, विदिशा, इंदौर, झाबुआ, आलीराजपुर, धार, बुरहानपुर, बड़वानी, खंडवा, खरगोन, उज्जैन, नीमच, मंदसौर,



रतलाम, आगर-मालवा, शाजापुर, देवास, नर्मदापुरम, बैतुल, हरदा, ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, जबलपुर, कटनी,

नरसिंहपुर और छिंदवाड़ा में बारिश का अलर्ट है। वहीं पाटुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडोरी, रीवा, सतना, सीधी,

सिंगरौली, मऊगंज, मैहर, शहडोल, उमरिया, अनूपपुर, सागर, पन्ना, दमोह, छतरपुर, टीकमगढ़ और निवाड़ी में भी कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश हो सकती है।

4 दिन में सुधरे बारिश के आंकड़े

पिछले चार दिनों की लगातार बारिश से प्रदेश में वर्षा की कमी कम हुई है। 20 जुलाई तक सामान्य से 17त कम बारिश दर्ज की गई थी, जो अब घटकर 11त रह गई है। फिलहाल प्रदेश में औसतन 330.4 मिमी (13 इंच) बारिश हुई है, जबकि इस समय तक 370.9 मिमी (14.6 इंच) बारिश होनी चाहिए थी।

14 जिलों में सामान्य से ज्यादा बारिश

देवास, भोपाल, इंदौर, सीहोर, राजगढ़, हरदा, बुरहानपुर, नीमच, आगर-मालवा, भिंड, मंदसौर और कुछ अन्य जिलों में सामान्य से ज्यादा बारिश दर्ज की गई है। देवास सबसे आगे है, जहां अब तक 19.6 इंच बारिश हो चुकी है। दूसरी ओर प्रदेश के 41 जिलों में अब भी सामान्य से कम बारिश रिकॉर्ड की गई है।

जलभराव और बाढ़ जैसे हालात की आशंका- मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि लगातार बारिश के कारण निचले इलाकों में जलभराव, ओढ़े नदी-नालों में उफान और कुछ स्थानों पर बाढ़ जैसी स्थिति बन सकती है। लोगों को मौसम विभाग की सलाह का पालन करने और अनावश्यक यात्रा से बचने की सलाह दी गई है।

धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे से एमपी के स्टूडेंट्स भी खुश

इंदौर में देशभक्ति गीतों पर झूमे छात्र, कटनी में मिठाई बांटी, पटाखे फोड़े

भोपाल/इंदौर (नप्र)। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की खबर सामने आते ही इंदौर में पिछले 25 दिनों से आंदोलन कर रहे छात्रों के बीच जश्न का माहौल बन गया। टर्ट्या भील चौराहे पर धरने पर बैठे छात्रों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी जताई और धरना समाप्त करने की घोषणा कर दी। इस दौरान प्रदर्शनकारी हाथों में तिरंगा लेकर देशभक्ति के गीतों पर झूमे और छात्र एकता जिंदाबाद के नारे लगाए। छात्रों का कहना है कि यह उनके लंबे संघर्ष और एकजुटता की जीत है। हालांकि उन्होंने साफ किया कि परीक्षा प्रणाली में पूरी पारदर्शिता और व्यापक सुधार की मांग पूरी होने तक उनका आंदोलन जारी रहेगा।



मीडिया के लिए संकट और चुनौतीपूर्ण समय: शर्मा

भोपाल। दुष्यंत कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय में हुए समारोह में वरिष्ठ पत्रकार राजेंद्र शर्मा (नई को लोकजतन सम्मान 2026 से सम्मानित किया गया छ व्यंगकार एवं कवि वीरेंद्र जैन की अध्यक्षता में उन्हें प्रदेश के वरिष्ठतम संपादकों में से एक डॉ राम विद्दोही ने सम्मान पत्र भेंट किया। समारोह में कोरोना लॉकडाउन के दौरान 2020 के लोकजतन सम्मान से अभिनंदित कमल शुक्ला को भी मानपत्र भेंट किया गया।

अपने संबोधन में राजेंद्र शर्मा ने मीडिया की वर्तमान स्थिति पर चिंता व्यक्त की और अफसोस जताया कि जिस देश में मीडिया ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में इतनी प्रमुख भूमिका निबाही थी कि हर महत्वपूर्ण नेता स्वयं



टी-स्टॉल पर लात-घूसे चले, वीडियो वायरल

तीन मोहरों के पास दो गुटों में विवाद, पुलिस बोली- अब तक किसी ने शिकायत नहीं की

भोपाल (नप्र)। भोपाल के शाहजहांनाबाद थाना क्षेत्र स्थित तीन मोहरों के पास गुप्ता टी स्टॉल पर युवकों के दो गुटों के बीच मारपीट का मामला सामने आया है। विवाद का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। वीडियो में एक युवक के साथ लात-घूंसे से मारपीट होती दिखाई दे रही है।

मारपीट के बाद युवक सड़क पर गिर जात है और आसपास मौजूद लोग उसे संभालते नजर आते हैं। घटना शनिवार तड़के करीब पांच बजे की बताई जा रही है। हालांकि वायरल वीडियो कब का है, इसकी पुष्टि नहीं हो सकी है।

थाने में नहीं दर्ज हुई शिकायत

शाहजहांनाबाद थाना प्रभारी यूपीएस चौहान ने बताया कि वायरल वीडियो की जानकारी पुलिस को है, लेकिन अब तक किसी भी पक्ष ने थाने में शिकायत दर्ज नहीं कराई है। किसी अस्पताल से भी इस संबंध में मेडिकल लीगल केस (एमएलसी) की सूचना नहीं मिली है।

पुलिस वीडियो की जांच कर संबंधित युवकों की पहचान करने का प्रयास कर रही है। टीआई का कहना है कि यदि किसी पक्ष की ओर से शिकायत मिलती है या जांच में कोई संज्ञेय अपराध सामने आता है, तो नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल पुलिस पूरे घटनाक्रम की जांच कर रही है।

मप्र में बड़ा प्रशासनिक फेरबदल

20 आईएस अधिकारियों का ट्रांसफर, सुदाम खाड़े बने सीएम के नए सचिव

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में प्रशासनिक जमावट का दौर तेज हो गया है। अशोक बर्णवाल के मुख्य सचिव बनने के ठीक बाद मुख्यमंत्री मोहन यादव ने शुक्रवार देर रात मंत्रालय से लेकर मैदानी स्तर तक बड़ा प्रशासनिक फेरबदल कर दिया है। सरकार ने आदेश जारी करते हुए कुल 20 आईएस अधिकारियों के तबादले किए हैं, जिसमें कई जिलों के नए कलेक्टरों की नियुक्ति के साथ-साथ प्रमुख विभागों के जिम्मा में फेरबदल किया गया है।

इस प्रशासनिक फेरबदल के तहत इंदौर के कमिश्नर सुदाम खाड़े को मुख्यमंत्री का नया सचिव बनाया गया है। वहीं, अपर मुख्य सचिव नीरज मंडलोरई पर भरोसा जताते हुए उन्हें उद्योग के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग का अतिरिक्त दायित्व भी सौंपा गया है। जनवरी 2027 में होने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट को सफल बनाने की जिम्मेदारी इसी विभाग के पास है।

इन जिलों के बदले गए कलेक्टर

मैदानी स्तर पर कसावट लाते हुए सरकार ने कई जिलों के जिला कलेक्टरों में बदलाव किया है। सामान्य प्रशासन विभाग के अपर सचिव अजय कट्येसरिया को रतलाम का नया कलेक्टर बनाया गया है। इसके अलावा अन्य जिलों में हुए फेरबदल इस प्रकार हैं-

शहडोल- कैदार सिंह के स्थान पर निशा सिंह को नया कलेक्टर बनाया गया है।

अनूपपुर- हर्षल पंचोली के स्थान पर उज्जैन के अपर आयुक्त रत्नाकर झा को कमान सौंपी गई है।

मंदसौर- अदिति गर्ग की जगह नगरीय प्रशासन एवं विकास की अपर आयुक्त दिव्यंका सिंह को मंदसौर कलेक्टर बनाया गया है।

आगर मालवा- प्रीति यादव के स्थान पर सतना नगर निगम के आयुक्त शेर सिंह मीना को



पदस्थ किया गया है। **खरगोन-** कलेक्टर गुरु प्रसाद को उप सचिव मुख्य सचिव बनाया गया है।

वरिष्ठ अधिकारियों के विभागों में भी बदलाव- प्रशासनिक फेरबदल के तहत वरिष्ठ आईएस अधिकारियों के प्रभार भी बदले गए हैं। अभी तक उद्योग विभाग संभाल रहे राघवेंद्र सिंह को वन विभाग की कमान दी गई है, जबकि मुख्यमंत्री के भरोसेमंद अधिकारी माने जाने वाले सदीप यादव अब जल संसाधन विभाग संभालेंगे। यह विभाग अभी तक अपर मुख्य सचिव राजेश राजौरा देख रहे थे। चूंकि वे सबसे वरिष्ठ आईएस अधिकारी हैं और उनसे कनिष्ठ अधिकारी को मुख्य सचिव बनाया गया है, इसलिए उन्हें मंत्रालय से हटाकर महानिदेशक प्रशासन अकादमी पदस्थ किया गया है।

इसके अलावा, प्रमुख सचिव मनीष सिंह अपने मौजूदा काम के साथ ऊर्जा विभाग का अतिरिक्त प्रभार भी देखेंगे, और ई. रमेश कुमार को नर्मदा घाटी विकास विभाग का प्रमुख सचिव बनाया गया है।

दिवशा शर्मा मामला

गिरिबाला सिंह की जमानत मामले में तीसरे जज ने छोड़ी सुनवाई, 50 दिन से जेल में बंद, अब फंसा पेंच

भोपाल (नप्र)। राजधानी के बहुचर्चित दिवशा शर्मा की मृत्यु के मामले में पिछले 50 दिनों से भोपाल सेंट्रल जेल में बंद पूर्व जिला जज गिरीबाला सिंह की जमानत की राह आसान नहीं हो रही है। शुक्रवार को इस मामले में एक नया मोड़ तब आया जब भोपाल जिला कोर्ट की एक और जज ने इस मामले की सुनवाई से खुद को अलग कर लिया। इसके बाद मामला दूसरी अदालत में ट्रांसफर किया गया, जहां दोनों पक्षों की लंबी बहस के बाद कोर्ट ने अपना फैसला सुनिश्चित रख लिया है।



विशेष सीबीआई जज नीलम शुक्ला ने मामले की सुनवाई करने से इनकार कर दिया। उन्होंने वजह बताई कि जब गिरिबाला सिंह ग्वालियर में अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश के तौर पर तैनात थीं, तब उन्होंने उनके अंडर में न्यायिक प्रशिक्षण लिया था। इससे पहले भी दो अन्य जज गिरीबाला और उनके परिवार से पुराने संबंध के चलते खुद को इस मामले से अलग कर चुके हैं। इसके बाद मामला विशेष जज राम प्रसाद मिश्रा की अदालत में पहुंचा, जहां दोपहर बाद दोनों पक्षों के वकीलों ने अपनी दलीलें रखीं।

बचाव पक्ष और अभियोजन पक्ष के बीच तीखी बहस

सुनवाई के दौरान बचाव पक्ष के वकील ने गिरीबाला सिंह के लिए नियमित जमानत की मांग करते हुए उनकी उम्र, स्वास्थ्य और पारिवारिक परिस्थितियों का हवाला दिया। बचाव पक्ष ने कहा कि जेल में गिरीबाला की तबीयत ठीक नहीं है और उन्हें घर पर अपनी 100 साल की बुजुर्ग मां की देखभाल करनी है, जो पूरी तरह से उन्हीं पर निर्भर हैं।

वकील ने यह भी तर्क दिया कि आरोपी एक सेवानिवृत्त जिला जज हैं जिन्हें युद्ध विधवा (वार विडो) पेंशन मिलती है और घटना के वक्त वे जिला उपभोक्ता फोरम की अध्यक्ष थीं, इसलिए उनकी वित्तीय स्थिति को देखते हुए दहेज की मांग या प्रताड़ना का आरोप बेवृनिबाद है।वहीं, मृतका दिवशा के पिता के वकील अंकुर पांडे और सीबीआई के वकील ने जमानत का कड़ा विरोध किया।उन्होंने दलील दी कि आरोपी ने जांच में पूरा सहयोग नहीं किया है और यदि उन्हें जमानत मिलती है, तो वे गवाहों को प्रभावित कर सकती हैं।

पूर्व जिला जज गिरीबाला सिंह और उनके वकील बेटे समर्थ सिंह पर उनकी बहू और माॅडल -दिवशा शर्मा की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत और दहेज प्रताड़ना के आरोप हैं। मां-बेटे दोनों पिछले 50 दिनों से भोपाल सेंट्रल जेल में बंद हैं और कानूनी लड़ाई लड़ रहे हैं।



विचार

रविकान्त राऊत



इस बार आषाढ़ की आखिरी रात को जब आसमान में गड़गड़ाहट हुई, तो वह हमेशा जैसी संगीत-मयी ध्वनि नहीं थी। वह प्रकृति का कोई पुराना राग नहीं, बल्कि एक अंतिम नोटिस जैसा था।

हम सदियों से एक मुग़ालते में जी रहे थे। हमारा मानना था कि जुलाई आते ही बादलों का कर्तव्य है कि वे आएँ, हमारी बोई हुई कंक्रोट की इमारतों पर बरसें, हमारी सूखी नदियों को थोड़ा सा जीवनदान दें और चले जाएँ। हमने मान लिया था कि वर्षा ऋतु हमारे ऐशो-आराम, हमारी रील-कहानियों और हमारी खिड़की से दिखने वाले रोमांटिक ‘व्यू’ की गुलाम है।

लेकिन इस बार, पहली बारिश की बूंद जब शहर की चौबीसवीं मंजिल की बालकनी पर गिरी, तो उसमें मिट्टी की सोंधी खुशबू नहीं थी। उसमें एक अजीब सा सन्नाटा था।

शहर के बीचों-बीच खड़े सी साल पुराने बरगद के पेड़ ने, जिसे मेट्रो की नई लाइन के लिए अगले हफ्ते काटा जाना था, उस रात आसमान से बात की। यह संवाद किसी ने नहीं सुना, सिवाय उस एकांतप्रिय लेखक के जो उसकी छांव तले बैठा अपनी डायरी में ‘वर्षा’ पर एक रूढ़िवादी कविता लिखने की कोशिश कर रहा था।

बरगद ने बादलों से पूछा, ‘इस बार इतनी देर क्यों की भाई? खैर, नीचे देखो, इंसान ने तुम्हारी बूंदों को समेटने वाले सारे तालाबों पर मॉल खड़े कर दिए हैं। तुम्हारे ठहरने की जगह ही नहीं बची।’

काले स्याह घने बादल ने गरजकर कहा, ‘हम देर से

अगर बादलों ने ‘अनुबंध’ तोड़ दिया ?

बरगद ने बादलों से पूछा, ‘इस बार इतनी देर क्यों की भाई? खैर, नीचे देखो, इंसान ने तुम्हारी बूंदों को समेटने वाले सारे तालाबों पर मॉल खड़े कर दिए हैं। तुम्हारे ठहरने की जगह ही नहीं बची।’ काले स्याह घने बादल ने गरजकर कहा, ‘हम देर से नहीं आए हैं, हम बस सोच रहे थे कि इस बार बरसों या सिर्फ चैतावनी देकर चले जाएं। सदियों से हम अपनी पूरी वफादारी से इस धरती की कोख हरी करते आए हैं। लेकिन आजकल हम देख रहे हैं कि इंसान केवल पानी चाहता है, मानसून नहीं। वह बारिश की बूंदें तो चाहता है, लेकिन उन बूंदों को सहेजने वाली जमीन को कत्ल कर देना चाहता है।’



नहीं आए हैं, हम बस सोच रहे थे कि इस बार बरसों या सिर्फ चैतावनी देकर चले जाएँ। सदियों से हम अपनी पूरी वफादारी से इस धरती की कोख हरी करते आए हैं। लेकिन आजकल हम देख रहे हैं कि इंसान केवल पानी चाहता है, मानसून नहीं। वह बारिश की बूंदें तो चाहता है, लेकिन उन बूंदों को सहेजने वाली जमीन को कत्ल कर देना चाहता है।’

यह वर्षा ऋतु का एक बिल्कुल नया चेहरा था। ऐसा लगा जैसे, इस बार बारिश इंसानी इच्छाओं की पूर्ति के लिए नहीं, बल्कि अपना हिसाब मांगने आई थी।

आज का मानव कितना अजीब है। जब पहली फुहार पड़ती है, तो वह खिड़की बंद कर लेता है। वह वातानुकूलित कमरों में बैठकर ‘हैप्पी मानसून’ का स्टेटस डालता है, लेकिन उसी मानसून की बाढ़ से बेघर होते जंगलों और बेजुबान जानवरों की चीखें उसके कानों तक नहीं पहुँचतीं। हमने ‘जल-चक्र’ को सिर्फ किताबों का हिस्सा बना दिया और जल-संकट को एक हेडलाइन।

पर प्रकृति का नियम बड़ा साफ है, यहाँ सृजन और

संरक्षण साथ-साथ चलते हैं। अगर आप सृजन करने वाली कोख (चाहे वह धरती हो, नदी हो या स्त्री) का सम्मान नहीं कर सकते, तो आपके हिस्से के ‘सावन’ का बंजर होना तय है।

हम बारिश के पानी को ‘ड्रेनेज’ (नाली) का रास्ता दिखाते हैं और फिर बातलों में बंद पानी को रुपए देकर खरीदते हैं। प्रकृति हमारी इस नासमझी पर हर बार दहाड़ती है और हम समझते हैं कि बिजली कड़क रही है।

इस बार, जब आपके शहर में बारिश हो, तो जरा अपनी बालकनी की छतरी से बाहर निकलिए। अपने हाथ फैलाकर उस पानी को महसूस कीजिए और खुद से पूछिए— ‘क्या हम इस बारिश के हकदार हैं?’

वर्षा ऋतु महज एक मौसम नहीं है, यह ईश्वर द्वारा हर साल धरती को भेजा जाने वाला एक प्रेम-पत्र है। लेकिन याद रखिए, अगर प्रेम-पत्रों का जवाब सिर्फ उपेक्षा से दिया जाए, तो डाकिया एक दिन रास्ता बदल लेता है। बादलों के रास्ता बदलने से पहले, आइए हम अपनी सोच का रास्ता बदलें।



कविताएं

राजकुमार कुम्भज की दो कविता?

क्या गजब दिन हैं बारिश के

क्या गजब दिन हैं बारिश के
बरसता पानी भी सुलगाता है आग
अपने शहर से दूर बहुत दूर भटकता हूँ मैं
ताजा अखबार में अपने जूते लपेटे हुए
घर से बेघर हो गए गरीब लोगों के चेहरे
और खबरें बाढ़ के क्रूर की पढ़ते हुए
कहीं-कहीं तो पूरे के पूरे गाँव ही बह गए
कहीं-कहीं बच गए मंदिर,मस्जिद,चर्च
डूब गई सब्जी-मंडी,बच गया सर्राफ़ा
स्कूल-कॉलेज रहे नहीं,रह गये चकलाघर
शराबखाने,क्रसाईखाने,जुआखाने बच गए
बचे नहीं पुस्तकालय और न्यायालय कहीं
हर जगह परदा है,पहरा है,पॉलिटिक्स है
पूछता नहीं,कोई भी पूछता नहीं बारिश से
कि बता दरअसल तेरी पॉलिटिक्स क्या है
घर और शहर के फ़ासले का माजरा क्या है
रोज़ा रक्खें,न रक्खें वाहई जरूरी तो है नहीं
मागर कमबख़ूत रोज़ा-इफ्तारी है जरूरी
लोग क्या कहेंगे,इता रहता हूँ इसी मर्ज से
नंगा हो कर रहा है देवताओं को भी नंगा
पहली बारिश का स्नान मिटा देता है ख़ाज
क्या ग़ज़ब दिन हैं बारिश के?

बारिश का अनुवाद हैं स्त्रियाँ

बुँदें लिख रही हैं परिभाषा, उनकी
पानी ही अद्वितीय अलंकार है स्त्रियों का
गरजता-बरसता रहता है उनका व्याकरण
आलोचना की अंतिम अधिकृत व्याख्या वे
घनघोर काली घटाओं का गर्जन-नर्तन वे
वे ही बाढ़,वे ही खेतों में अन्न का अर्थ भी
नदियों का प्रवाह वे,समुद्र का प्रलय भी वे
जंगलों की हरियाली का आचरण उन्हीं से
बारिश का रोद सँगीत है ।

पश्चाताप की एक नई लघुकथा

आसिम अनमोल

रचना हाँफ़ते और रोती हुई घर में जैसे ही घुसी। घर के सभी सदस्यों की अचरज भरी नज़रें उस पर पड़ी। क्यों कि रचना छुट्टियों में मायके रहकर ससुराल गई थी। माँ बेचैन होकर उसको कलेजे से लगाते हुए बोली बेटा क्या हुआ कोई बात हो गई क्या। रचना माँ को देखते हुए फफ़ककर फिर रोने लगी। बेटा कुछ तो बोलो हुआ क्या है। रचना खुद को संभालते हुए बोली। मैंने इनसे स्मार्ट फ़ोन दिलवाने के लिए क्या कह दिया। इन्होने पूरा घर सिर पर उठा लिया। मुझे खूब चिल्लाए। कहने लगे मेरा बजट नहीं है। मैं अभी मोबाइल नहीं दिलवा पाऊंगा। रहना है रहो नहीं तो अपने घर जाओ। इस बात पर मुझे खूब रोना आया। और हम चले आए। माँ ने बेटी की नानादी भरी जब यह कथा सुनी तो माँ न तो गुस्से में आईं। न ही माँ ने उसकी बात को सही

नवगीत

किसको कैसे पहचानें

मोहन वर्मा

चेहरे पर चेहरे देखें या फिर, दिल की बातें जानें
अजब समय की उलझन है ये किसको कैसे पहचानें
उसके दिल में अपनी खातिर
क्या अब भी कुछ बाकी है ?
किससे पूछें कौन बताए,
वो जानें या ख जानें
पथर जैसी इस दुनिया में
शीशे जैसे, लोंग बसे-
किरचे-किरचे रोज बिखरते
कैसे बचना ना जानें
क्या कीजे इस भावुक दिल
और सपनों वाली आँखों का-
नये समय और नई रीत से
ये अब तक हैं अंजाने
बिना खता की सजा भुगतते
किससे क्या फ़रियाद करें-
चाहत के बदले मिली हिकारत
रखते हैं हम सिरहाने
चेहरे पर चेहरे देखें या फिर दिल की बातें जानें
अजब समय की उलझन है ये किसको कैसे पहचानें।

तक्रोवित

- मुकेश राठौर

अपनी बात मनवाने के लिए खाने से इनकार करना कोई नई बात नहीं?बात सही है या गलत ये बाद की बात है?कोई खाकर भी गलत बात मनवा लेता है तो कोई हफ्तों भूखों मर कर भी सही बात नहीं मनवा पाता?वैसे सही बात देर से समझ आती है,कई बार कहने वाले के न रहने के बाद?बात का क्या है?कोई बात किसी के लिए सही तो किसी के लिए गलत हो सकती है?आदमी का स्वभाव है वह अपनी बात को ही सही मानता है?बकलम मरहम शायर राहत इंदौरी हमारे मुंह से जो निकले वही सदाकत है...?एक बात तो है बात और खाने का बहुत गहरा रिश्ता है?बात के धनी लोग खाने की चिंता नहीं करते,तो खाने वाले बात की?सीधी सी बात यह कि जिन्हें बात देखनी है वो खाना भूल जाए और जिन्हें खाने से मतलब है वो बात?सियासत में इन दो बातों का बड़ा महत्व है?इधर बात भी जरूरी है और खाना भी?जी सिर्फ बात पर गए वो काम से गए?जो खाने के पीछे दौड़े उनकी बात बन गई?ये बात और है कि टिकट की बात पर दिक्कत दोनों को जाती है क्योंकि जनता के बीच बात बनाने वाले की जुबान तकलीफ देती है तो खाने वाले का पेट?महज पेट की वजह से बात टिकट कटने पर आ जाए तो कुछेक पेट वाले राजधानी पहुंच पेट वालों से पेट वाले का टिकट कटवा ही लाते हैं जो काम सैकड़ों बात वाले बात वाले

हारस्य-व्यंग्य

सुरेश सौरभ

दिन निकला। सूरज उगा। नेता झटपट उठा। काम पर लगा। खटपट-खटपट मत करा। सरपट-सरपट सफाई अभियान पर लगा। खुले में शौच मत जा। फिरी वाले शौचालय में जा। फिर नल पर चल। कपड़े दाद की चौकी पर धर। टप से मलमल नहा। किसी के साथ मत नहा, न उसके साथ पिकवर बना। नहा कर खादी पहना। मेअकप करा। झोला उठा। झोले में झूठ-छल-कपट धर। फिर झोला उठा कर वरचुअल रैली पर चल। माइक साध। जोकर बन या जादूगर बन, नाटक करा। 'भाइयों और उनकी बहनों आप का यह सेवक,खाली झोला यह लेकर आया है। आप सब लोगों की कसम खाकर कहता है कि आप लोगों की खूब सेवा करने के बाद आप का यह अदना सेवक बस यह अपना यही खाली झोला उठा कर चला जायेगा। मैंने देश के लिए अपना सब कुछ छोड़ा। अब आप सब मुझे

सेवा का अवसर दें।' फिर रंगा सियार बना। जनता को अपने झोले के उस जादू से फंसा। जात-धरम में सबको उलझा। मंदिर-मस्जिद में सबको लड़ा। गाय-बैल के कोल्हू में बांध जनता को खूब पचा। हर बुध पर अपने युग लफा। बूथ पर कब्जा जमा। चुनाव जीता। फिर विधायक-एमएलसी खरीद कर मंत्री-मुख्यमंत्री बन। चाहे ऐसे, चाहे वैसे या फिर चाहे जैसे बस कुरसी पा। लाल बत्ती से भौकाल बना। फिर जनता का खूब धन चूस। अकूत धन कमा। भोंपू मीडिया खरीद। खुद को देव, दानव, मानव सबका नेता बताता चल। फिर सब चैनल पर बता, 'जनता सारी खुश। सब खा रही दूध-भात। हवाई चंपल वाले लेबर्स लिए है हवाई जहाज। सारी नदियां साफ। सारी देश की गलियां साफ। बेकारी हुई फूरी। कहीं न पेपर लीक, कहीं नहीं प्रदूषण, न कहीं गरीबों का शोषण। न कहीं किसी सीमा पर विदेशियों का अतिक्रमण। सब सुबो। सब सम्पन्न, ऐसा अपने मन की बात में सारी दुनिया को बता। मजबूती से जता। तब न होगी तेरी कोई खता। न होगा तुझसे कोई जुदा। सब मांमेगे तुझे खुदा।

गज़ल

इरादा भी नहीं



कमलेश कुमार दीवान

जिस्म है जा है कुछ और इरादा भी नहीं
यू ही इस राह में चलने का बादा भी नहीं।

मैं मुंतज़िर भी नहीं उनकी आरजू भी नहीं
ये इल्तिज़ा है जो उम्मीद से ज़्यादा भी नहीं।

कोई करार से बेजार तो कोई बेकार बहुत
शिकायतें हैं तो दूर करने का माझ भी नहीं।

बड़े सुकून से हम उम्र की कशती में चले
सफ़र लम्बा है और ये अभी आधा भी नहीं।

दीन दुनियां से क्यों अनजान रहा है 'दीवान'
जानता यह भी कि इंसान एक प्यादा भी नहीं।

और मां बेटी हंस पड़ीं

चाय बनाती, सबको नाश्ता देती, फिर अपने लड्डु गोपाल की सुध लेती। उन्हें तैयार करती, पोशाक बदलती, भोग लगाती और तल्लीन होकर पूजा करती। फिर वही दोपहर का भोजन बनाना, कपड़े धोना ?, बच्चों का कमरा ? और चीजों को व्यवस्थित करना, इतने में शाम हो जाती। थोड़ा सा सुस्ता कर शाम के खाने में लग जाती। किसी का भी ध्यान इस ओर नहीं गया कि वह सुबह से रात तक रोबोट की तरह काम करती रहती है। कभी अपने बारे में सोचने का शायद उन्हें समय ही नहीं मिलता। सबको लगता कि वह अपनी इसी दुनिया में खुश है। उसकी बेटी रसिका अब बड़ी हो गई है। बारहवीं पास कर अपने कालेज जाने के ? सपने बुन रही है। एक दिन उसका ध्यान माँ की रोबोट जैसी जिंदगी की ओर गया।

प्रिय ? माँ !
तुम बहुत अच्छी और प्यारी हो। माँ ! मैं तुम्हें रोज सुबह से शाम तक रोबोट की तरह काम करते देखती हूँ। आप अपने लिए जीना भूल गई हैं।माँ ! मैं तुम्हें खिलखिला कर हंसते हुए देखना चाहती हूँ। रात को हम छत पर चलेगे, तारे देखेंगे और पूनम के चांद के साथ प्रकृति के वैभव को निहारेगे। बहुत दिनों से आप छत पर भी नहीं गई है। और हाँ माँ ! कल रविवार है। सुबह के नाश्ते और खाने से मैं आपको मदद करूँगी। फिर हम पापा के साथ शापिंग करेंगे। आपने भी बहुत दिनों से अपने लिए साड़ी नहीं खरीदी है। फिर सराफे की चाट का आनंद लेगे। घर के बाहर भी एक जिंदगी है। तैयार रहना माँ !

आपकी रसिका
रसिका ने वह पत्र माँ के तकिये के नीचे रख दिया। सुबह जब माँ ने तकिये के नीचे वह छोटा सा कागज देखा तो रसिका की लिखावट देख कर किसी अनहोनी की कल्पना से सिहर उठी। लेकिन पढ़ना शुरू किया तो उनकी आंखों से खुशी के आंसू बह निकले। उन्होंने रसिका को आवाज दी और कस कर बाहों में भर लिया। दूसरे दिन शापिंग के बाद सराफा पहुंचे। वहाँ चाट के चटखारे के बाद जब भावना कुल्फी खा रही थी तो अतीत की यादों में खो गई और कुल्फी की डंडी को चाटती रही। माँ के चेहरे की संतुष्टि और आनंद में डूबे मन को रसिका ने हल्के से थपकी दी और बोली-
इस बेचारी डंडी की और कितना चाटोगी माँ। अब तो इसे छोड़ दो। और दोनों माँ-बेटी खिलखिला कर हंस पड़ी।

लघुकथा

कुसुम जैन

समीक्षक

माँ वना एक कुशल गृहिणी है। सुबह 6 बजे से उठकर वह गृहस्थी के सारे काम बड़े मनोयोग से करती। सबसे पहले घर को व्यवस्थित बुहार कर, नल का समय हो जाने पर पानी भरती। चाय बनाती, सबको नाश्ता देती, फिर अपने लड्डु गोपाल की सुध लेती। उन्हें तैयार करती, पोशाक बदलती, भोग लगाती और तल्लीन होकर पूजा करती। फिर वही दोपहर का भोजन बनाना, कपड़े धोना , बच्चों का कमरा?और चीजों को व्यवस्थित करना, इतने में शाम हो जाती। थोड़ा सा सुस्ता कर शाम के खाने में लग जाती। किसी का भी ध्यान इस ओर नहीं गया कि वह सुबह से रात तक रोबोट की तरह काम करती रहती है। कभी अपने बारे में सोचने का शायद उन्हें समय ही नहीं मिलता। सबको लगता कि वह अपनी इसी दुनिया में खुश है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक

उमेश त्रिवेदी

कार्यकारी प्रधान संपादक

अजय बोकिल

संपादक (मध्यप्रदेश)

विनोद तिवारी

वरिष्ठ संपादक

पंकज शुक्ला

प्रबंध संपादक

अरुण पटेल

(सभी विचारों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,

Ph. No. 0755-2422692, 4059111

Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं।
इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला	
पंकज तिवारी	
कला समीक्षक	



कला, साहित्य समाज का आईना तो होता है पर एक कलाकार बन पाना इतना आसान नहीं जितना कि कुछ और, स्वतंत्रता पूर्व तो और भी नहीं था। कई लड़ाइयाँ एक साथ लड़नी पड़ती है एक इंसान को एक कलाकार बनने हेतु। नंदलाल बोस भी इन्हीं लड़ाकों में से थे। कलाकार बनने हेतु परिवार का बिल्कुल भी समर्थन नहीं था जबकि पढ़ना नंदलाल के बस में नहीं था बस किसी तरीके से ढो लेने वाली स्थिति में था, किसी तरीके से कुछ हद तक पढ़ाई कर सके पर आगे जाना मुमकिन नहीं हो पा रहा था जबकि कला रग-रग में थी पर संग कोई नहीं था। माई क्षेत्रमनी देवी एक गृहिणी थीं, जो घर के कामकाज के साथ ही नंदलाल के लिए खिलौने और गुड़िया भी बना लिया करती थीं। पूजा पंडालों को सजाने में भी बोस को बड़ा आनंद आता था। गाँव और आसपास के लोक शैली के चित्र, लोक पद्धतियाँ, कुम्हारों द्वारा बनी वस्तुएं भी आपको बहुत ही लुभाती थीं। आपमें रह-रह कर एक वेग सा उठ जाता था कलाकारी का और कहीं भी रेखाचित्र बनाने लग जाते थे। चोरी छिपे कला की बारीकियाँ भी सीखते रहते थे। ठंडी-ठंडी ओस की बूंदों से ढंकी सुबह की लालिमा से युक्त कोमल, मन को लुभावन धूप हो जिस पर चलना संसार के सभी सुखों से इतर है

या शाम की विदाई बेला का शांत बिल्कुल शांत, सुगंधित, तुलसी, नीम के पौधों की खुशबुओं से सनी झूमती, इटलती, मटक कर चलती हवा हो, मिट्टी जो जीवन भर के तमाम झँझावातों से लड़ खड़े होने के बाद भी मनुष्यों में जिजीविषा को बरकरार रखती है, खुद में समेटे रहती है पीढ़ियों-पीढ़ियों पूर्व की गंध, जिसमें पुराने गीत, संस्कृति, संस्कार का पुट हमेशा जिंदा रहता है ऐसे ही वातावरण में एक नन्हा सा बालक जिसके मन में शुरु से ही कला के प्रति दीवानगी थी जो सपने में भी कौतले से आभासीय पटल पर अपने मनमुताबिक कृतियों का सृजन करने लगा था, अनगिनत कृतियों का संसार जिसके भीतर समाया हुआ था और जो आगे चलकर बिल्कुल शांत, धीर-गंभीर कला साधक के रूप में पहचाना गया। भारतीय कला में नंदलाल बोस की

कलाकार नंदलाल बोस और मुंगेर की माटी

वैदिक युग में रथ बनाने वाले रथकार कहे जाते थे। कई जगहों पर रथ के अनेक-अनेक अंगों का वर्णन भी मिलता रहा है। धुरा, पहिया, जुआ, रथमुख आदि का भी जिक्र है। कलश, अमत्र (हांडी), ऊखा(कड़ाही), चमस आदि के उपयोग से एक समृद्ध गृहस्थी का परिचय भी मिलता है। गृहनिर्माण में प्रयोग होने वाली वस्तुओं के उल्लेख से भी बहुत सारी परतें खुलती हैं खैर परतें तो बहुत हैं जिसपर निरंतर अध्ययन की दरकार है फिलहाल वेदों की बात न करते हुए आज मैं महर्षि बाल्मीकी जी द्वारा रचित भगवान श्री राम के जीवन पर लिखित रामायण की बात करते हैं और देखते हैं कि वहाँ पर कला कहाँ-कहाँ और किस-किस रूप में दर्शित है। हालांकि पूरी बात इस एक आलेख में ही नहीं निकल पाएगी पर फिर भी शुरुआती बातें तो जरूर समेटने का प्रयास किया जाएगा।

भूमिका अपने गुरु अवनीन्द्रनाथ जैसी ही रही बल्कि कई-कई जगह तो उनसे आगे भी बढ़ गए हैं। बिल्कुल साधारण से परिवार में जन्मे कलाकार नंदलाल आर्थिक संपन्नता से भले ही दूर रहे हों पर सच्चाई तो ये है कि संस्कारों से भरा-पूरा माहौल था। माँ हमेशा पूजा-अर्चना में लगी रहती थीं, घर के सभी अच्छी-बुरी चीजों पर बारीकियाँ से नजर रखती थीं और मौका मिलते ही जीवन के कई-कई अध्यायों को पलक झपकते ही समझा भी देती थीं। सोते जागते या जब भी लगता तो नंदलाल को लोककथाएं, किस्से भी सुनाती रहती थीं। गुड़े-गुड़ियों, खेल-खिलौनों, छोटे-मोटे हस्तशिल्पों तथा अल्पना वगैरह भी बनाते रहा करती थीं। बालक जिसका जन्म बिहार के मुंगेर जिले के खड़कपुर कस्बे में हुआ था, खड़कपुर जो अपने झील और हरियाली वातावरण हेतु प्रसिद्ध था, जहाँ आम, नीम महआ, छोटी नदियाँ, तालाब, हरे-भरे खेत-खलिहान तो खेतों को जोड़ती अलग करती पतली-पतली पगढ़ीडियाँ और मिट्टी के कच्चे खपरैलों वाले घर थे, जो आगे चलकर बालक के कृतियों को गहरे तक प्रभावित किए थे।

नंदलाल बचपन से ही माँ द्वारा बनाए जा रहे कृतियों को देखकर मंत्रमुग्ध थे, को बचपन में कला अपने माँ से ही सीखने को मिली। हालांकि यह समय बहुत दिनों तक नहीं चल सका और जल्दी ही इनके माता का देहान्त हो गया। दुख की घड़ी के बाद से ही बालक नंदलाल के परवरिश का जिम्मा पिता जी पर आ गया, जो उन्होंने बखूबी निभाया। कस्बे में



(चित्र गूगल से साभार)

स्थानीय कुम्हार अधिक मात्रा में थे फलतः अधिकतर घरों में मिट्टी के बर्तन, खिलौने हमेशा कुछ न कुछ बन ही रहा होता था जिसे बालक घंटों खड़े होकर निहारता रहता था और धीरे-धीरे खुद भी बनाने का प्रयास करने लगा और इसी बहाने नंदलाल बहुत कुछ सीख लिए।

समय-समय पर दुर्गा पूजा जैसे और भी उत्सवों की तैयारी में पूरे मन से लगे रहते थे नंदलाल बोस।

बालक का मन पढ़ने में कभी नहीं लगा फिर भी पिता के इच्छानुसार की मेरा बच्चा पढ़-लिखकर कर स्थायित्व को प्राप्त कर लेगा फलतः पंद्रह वर्ष की अवस्था में नंदलाल अध्ययन हेतु कलकत्ता चले गए, अध्ययन करते रहे पर मन था कि यहाँ रमता नहीं था। बाँधे-बाँधे बियाह कैसे संभव होता, बोस का भी मोहभंग हो गया था पढ़ाई से, पढ़ते तो थे पर बढ़ नहीं पाते थे, स्कूल बदलते रहे कि कहीं से तो आगे बढ़ सके पर रंगों से खेलने को आतुर कलाकार को रटत शिक्षा कहीं तक बाँध पाती, नहीं बंधे बोस। कला हेतु परिवार राजी नहीं था तो शिक्षा हेतु नंदलाल। इन्हीं द्वांन्तमक परिस्थितियों से लगातार जूझते हुए इक्कीस वर्षीय नंदलाल का विवाह एक दिन सुधीरा देवी जी से हो गया। नंदलाल के कला सफर में भी

सुधीरा देवी ने भरपूर सहयोग किया। नन्दलाल बोस को बनना तो

कलाकार था आखिर कब तक कोई रोक पाता, नहीं रोक सका और अंत में ‘मन के हारे हार है, मन के जीते जीत’ वाली बात चरितार्थ हुई। धीरे-धीरे परिवार को मना लेने में सफलता हासिल हुई पर मुश्किलें यहीं नहीं

रुकीं बल्कि साथ चलती रहीं और जैसे कहा जाता है कि हर सुबह के पूर्व गहन अंधेरे से सामना होता है कुछ ऐसी ही परिस्थिति यहाँ भी बनी कलकत्ता कला विद्यालय में दाखिला भी बड़े मशक्कत के बाद ही मिल सका। नंदलाल को सानिध्य मिला अवनीन्द्रनाथ टैगोर जी का जो उस समय कला में नई क्रांति हेतु काम कर रहे थे जिनके काम से नंदलाल बहुत प्रभावित थे।

कला विद्यालय में दाखिले के बाद से आप तो जैसे उसी दुनिया में रम से गये और नित नये कारनामों से लोगों को आश्चर्य चकित करते रहे सीखने के साथ ही अपने अलग शैली पर भी आप लगातार काम करते रहे थे। ग्रामीण परिवेश जो आपके मन में बसा हुआ था आपके कृतियों में उतरने लगा। आकृतियाँ स्वतंत्र थीं पर मिट्टी की महक बरकरार थी, मटमैला पृष्ठभूमि, लचकदार कद-काठी आपके कृतियों की पहचान बनी। नंदलाल के कृतियों में संश्लेषणात्मकता की छाप साफ नजर आती है।

आधुनिक भारतीय कला के इतिहास में महान भूमिका वाले कलाकार नंदलाल अवनीन्द्रनाथ, रवीन्द्रनाथ, आनंद कुमार स्वामी, हैवेल, महात्मा गांधी जैसे प्रमुख विचारकों के विचारों को एक साथ समन्वित करते हुए, अपने कृतियों में मौलिकता को बचाते हुए, जन आंदोलन के साथ भी जुड़ सका। देश के परिस्थितियों और उस दौर के कला के परिस्थितियों दोनों को एक दिशा देने में इनके भूमिका को भी भुलाया नहीं जा सकता। बोस के कृतियों में शालीनता है, वर्णनात्मक पद्धति पर सुजित कृतियाँ लोगों के जेहन तक अपनी पहुँच आसानी से बना लेती हैं। सुलभ तरीके से भावों को पटल पर प्रवाहित करने का उनका अपना अंदाज था। वो तमाम आर्डबॉरों से दूर ही रहा करते थे।

चित्रकार रजा की यादों के आसपास



स्मरण

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

सतपुड़ा के जंगलों के बीच बसे मण्डला शहर में चार दिन बिताकर लौट रहा हूँ और मन में छत्तीसगढ़ की अप्रतिम लोकगायिका और हबीब तनवीर के नया थियेटर से आजीवन जुड़ी रही पुनम तिवारी का गायन गूँज रहा है। यह गीत मेरा पीछा ही नहीं छोड़ रहा ---
चोला माटी के राम
एकहि का भरोसा, चोला माटी के रे....
द्रोना जैसे गुरू चले गये, करन जैसे दानी बाली जैसे बीर चले गए रावन से अभिमानी हाय चोला माटी के रे....
जब देश में हो रहे कई तरह के अन्याय के विरुद्ध हमारे बच्चे दिल्ली के जंतर-मंतर पर आंदोलित हो रहे हैं, संयोगवश हम कुछ लेखक-

कलाकार मण्डला में चित्रकार सैयद हैदर रज़ा की समाधि पर फूल चढ़ाने गये थे। हम रज़ा के रचे चित्रों में बसे प्रकृति और संसार के बीच उदारचरित राम, सत्याग्रही गांधी और राम- रहिम के एकत्व की अंतरंग उपस्थिति को महसूस करते रहे हैं। हम सबने मिलकर संसार, प्रकृति और साहित्य के अंतर्संबन्ध पर तीन दिनों तक बातचीत की और उसका सार यह निकला कि कुटिल राजनीतिक और बाजारू शक्तियाँ साधन रूप और मानव स्वभाव रूप जिस प्रकृति का विनाश करके धरती पर बसे समूचे जीवन को साधनहीन और संवेदनहीन बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही हैं तब अस्तित्व पर मँडराते ख़तरों की आहटों के बीच साहित्यकार इससे अछूते



नहीं रह सकते।

सभी लेखक इस मण्डला- साहित्य-कला विमर्श में इस विषय पर एकाग्र बने रहे कि जिस तरह विध

का जीवन परस्पर अंतर्निभर है उसी तरह इस बहुरंगी जीवन का आख्यान करने वाला साहित्य और कलाएं भी अंतर्निभर हैं। वे परस्पर एक-दूसरे पर आश्रित हैं। सब राग, मूर्तियाँ, रंगाकार, मुद्राएं और कविताएं मिलकर सबके जीवन में वह संभावना भरा पड़ोस सदियों से रचती चली आ रही हैं जिसमें मनुष्य समूचे अस्तित्व और अपनी मानवीयता का प्रामाणिक अर्थ पा सकते हैं। यह दुखद है कि शब्द-विद्या और कला के अंतरंग संबन्ध को समझने में हमारे समय की राजनीति अकुशल और भारी लापरवाह है।

मण्डला में हर वर्ष दो बार फरवरी और जुलाई में (रज़ा के जन्म दिवस और पुण्य तिथि पर) चित्रकार रज़ा की स्मृति में अनेक लेखक,

चित्रकार, संगीतकार और कला पारखी पर्यवेक्षक आते हैं। दस वर्षों से रज़ा फाउण्डेशन अत्यंत

सुरुचिपूर्वक यह आयोजन कर रहा है। इस साल भी लेखकों के विचार-

विमर्श के अलावा संध्याकाल में नर्मदा जी के तट पर पण्डवानी गायन, मोहिनी अट्टम की प्रस्तुति, शानदार मुशायरा और छत्तीसगढ़ी लोक गायन हुआ।पाँच दिनों तक लोक कलाकारों की कार्यशाला में काष्ठ शिल्प बनते रहे, चित्र रचे गये। एक कला प्रदर्शनी भी सबके लिए खुली रही। हर वर्ष इस आयोजन में मण्डला के नागरिक भी शामिल होते हैं।

रज़ा फाउण्डेशन के निदेशक और कवि अशोक वाजपेयी ने निराशा से भरते जा रहे इस समय में निराशा के सृजनात्मक कर्तव्यों की याद दिलाते हुए सचेत किया कि हम चुप नहीं रह सकते। उन्होंने अन्याय के शिकार बेटे- बेटियों के प्रति समुचित न्याय की माँग भी की। इस अवसर पर अशोक वाजपेयी ने च्हम भारत के लोग नाम से होने वाले एक बड़े देश व्यापी वैचारिक अभियान की घोषणा की है जो नौ अगस्त 2026 से प्रारम्भ होगा। देश के लगभग पचास शहरों में विभिन्न वैचारिक अनुशासनों से संबद्ध विद्वान भारत के संविधान की उर्देशिका में स्थापित--- स्वतंत्रता, समता, न्याय और बंधुता के मूल्यों पर जनसंबोधी विमर्श करेंगे।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अनर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।



दक्षिण भारत के जाने-माने निर्देशक सरोव शनमुगम की तमिल फिल्म- ' ओह माय डॉग ' वर्ष 2022 में प्रदर्शित हुई थी । एक बच्चे और अंधे साइबेरियन हस्की पिल्ले के बीच के खूबसूरत भावनात्मक रिश्ते पर आधारित थी वह फिल्म । जहाँ इसका नेक इरादा बच्चों को बहुत पसन्द आया था । अब चर्चित फिल्म - 'ओह माय गॉड 2 ' के सफल निर्देशक अमित राय उसी फिल्म का हिन्दी संस्करण - ' ओह माय डॉग ' लेकर दर्शकों के बीच आये हैं। यह फिल्म आगामी 31 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। निर्माताओं ने फिल्म का टीजर जारी किया है जो इंसानों और कुत्तों के बीच मौजूद प्यार, भरोसे और अटूट रिश्ते की एक भावनात्मक कहानी की झलक पेश करते है।

बाबूलाल बायोस्कोप और थिंकिंग हैट्स एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनी,अमित राय, राजेश भारद्वाज और सना वाससी द्वारा निर्मित इस फिल्म में माही राय, पंकज त्रिपाठी, गीता अग्रवाल शर्मा, राजेश कुमार, पवन मल्होत्रा, सुलाख्याना बरुआ, विजय मिश्रा के साथ-साथ कैनाइन स्टार्स ऑस्कर और ब्रूनो प्रमुख भूमिकाओं में नजर आएंगे। फिल्म में 250 से अधिक कुत्ते शामिल हैं। यह एक छोटे बच्चे और उसके प्यारे साथी डॉग के बीच के खूबसूरत और भावनात्मक रिश्ते की कहानी है।यह फिल्म बच्चों के लिए एक बेहतरीन पारिवारिक मनोरंजन है।इसमें जानवरों के प्रति दया, सहानुभूति और विकलांगता को कमजोरी न मानने का एक मजबूत संदेश दिया गया है।फिल्म दर्शकों को डर और पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर जानवरों के प्रति संवेदनशील बनने और उनके साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। फिल्म में वास्तविक जीवन के तीन पीढ़ी के कलाकारों-विजयकुमार, अरुण और उनके बेटे अर्नव विजय ,जो इस फिल्म से डेब्यू कर रहे हैं , को एक साथ देखना दिलचस्प है।

ओह माय डॉग: साफ सुथरी और प्रेरणादायक फिल्म

बाबूलाल बायोस्कोप और थिंकिंग हैट्स एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनी,अमित राय, राजेश भारद्वाज और सना वाससी द्वारा निर्मित इस फिल्म में माही राय, पंकज त्रिपाठी, गीता अग्रवाल शर्मा, राजेश कुमार, पवन मल्होत्रा, सुलाख्याना बरुआ, विजय मिश्रा के साथ-साथ कैनाइन स्टार्स ऑस्कर और ब्रूनो प्रमुख भूमिकाओं में नज़र आएंगे। फिल्म में 250 से अधिक कुत्ते शामिल हैं। यह एक छोटे बच्चे और उसके प्यारे साथी डॉग के बीच के खूबसूरत और भावनात्मक रिश्ते की कहानी है ।यह फिल्म बच्चों के लिए एक बेहतरीन पारिवारिक मनोरंजन है। इसमें जानवरों के प्रति दया, सहानुभूति और विकलांगता को कमजोरी न मानने का एक मजबूत संदेश दिया गया है ।फिल्म दर्शकों को डर और पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर जानवरों के प्रति संवेदनशील बनने और उनके साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। फिल्म में वास्तविक जीवन के तीन पीढ़ी के कलाकारों—विजयकुमार, अरुण विजय और उनके बेटे अर्नव विजय ,जो इस फिल्म से डेब्यू कर रहे हैं , को एक साथ देखना दिलचस्प है।



फिल्म की कहानी अर्जुन (अर्नव विजय) और सिम्बा (हस्की पिल्ले) के इर्द-गिर्द घूमती है। सिम्बा जन्म से ही दृष्टिबाधित है, जिसके कारण एक क्रूर ब्रीडर उसे छोड़ देता है। अर्जुन उसे बचाता है और दोनों के बीच एक गहरा बंधन बन जाता है। इसके बाद की कहानी

सिम्बा के इलाज, एक डॉग शो प्रतियोगिता और एक भ्रष्ट विलेन के खिलाफ उनकी लड़ाई को दर्शाती है ।समैक्षकों का मानना है कि फिल्म की कहानी काफी अनुमान लगाने योग्य और पुरानी है। फिल्म की पटकथा में कुछ तार्किक कमियाँ हैं और कई जगहों पर भावनाओं को जबरदस्ती

थोपा गया सा भी लगता है । चूँकि फिल्म की पटकथा काफी हद तक बच्चों को ध्यान में रखकर लिखी गई है, जिसके कारण वयस्क दर्शकों को यह थोड़ी नीरस लग सकती है। अगर आप डॉग प्रेमी हैं या बच्चों के साथ देखने के लिए एक साफ-सुथरी, प्रेरणादायक फिल्म

तलाश रहे हैं, तो यह एक अच्छा विकल्प है। लेकिन अगर आप एक मजबूत और लीक से हटकर पटकथा वाली फिल्म की उम्मीद कर रहे हैं, तो आप थोड़े निराश हो सकते हैं ।इस फिल्म की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह एक पारिवारिक मनोरंजक फिल्म होने के साथ-साथ इंसानों और जानवरों, विशेष रूप से कुत्तों, के बीच प्रेम, दोस्ती, दया और करुणा का संदेश देती है। फिल्म दर्शकों को डर और पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर जानवरों के प्रति संवेदनशील बनने और उनके साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना को अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

फिल्म के टीजर की शुरुआत अमिताभ बच्चन के सदाबहार गीत ‘मेरे पास आओ मेरे दोस्तों, एक किस्सा सुनो’ से होती है, जो दर्शकों में पुरानी यादों को ताज़ा करते हुए कहानी की मासूमियत, अपनापन और भावनात्मक गहराई को खूबसूरती से सामने लाता है।निर्देशक अमित राय के अनुसार कुत्ते हमें निस्वार्थ प्रेम और वफादारी का सबसे शुद्ध रूप सिखाते हैं इन्हीं के माध्यम से मैं ऐसी कहानी कहना चाहता था जो भावनात्मक होने के साथ-साथ मनोरंजक भी हो और हर परिवार के दिल को छू सके। यह सिर्फ एक बच्चे और उसके डॉग की कहानी नहीं है, बल्कि सभी जीवों के साथ करुणा और प्रेम के साथ सह-अस्तित्व में जीने का संदेश है। अगर इस फिल्म को देखने के बाद लोगों के मन में जानवरों के प्रति थोड़ी भी संवेदनशीलता और दया बढ़ती है, तो मुझे लगेगा कि हमारी फिल्म अपने उद्देश्य में सफल रही ।

पहली बार निकली जगन्नाथ रथ यात्रा से पावन हुई बैतूल नगरी

जय जगन्नाथ- हरि बोल के जय घोष से गूंजा आसमान

बैतूल। बैतूल के लिए आज का दिन इतिहास के पन्नों में हमेशा याद रहेगा। अवसर था, जगन्नाथ जी की रथ यात्रा का। वैसे तो अमूमन धार्मिक माहौल में वर्षों से रचा बसा एवं साम्प्रदायिक सद्भाव की मिशाल बना बैतूल शहर में समय-समय पर अनेक आयोजन होते है लेकिन देवशयनी एकादशी के शुभ अवसर पर 25 जुलाई शनिवार को पूरे भक्ति-भाव के साथ पहली बार निकली भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा में हजारों श्रद्धालुओं की मौजूदगी ने इतिहास रच दिया। इस्कॉन इंदौर के मार्गदर्शन में श्री जगन्नाथ रथ यात्रा समिति ने माता मंदिर गंज से रथ यात्रा प्रारंभ की। फूलों से सजे धजे रथ में सवार भगवान जगन्नाथ, बड़े भाई बलभद्र एवं बहन सुभद्रा दर्शन देने निकले तो श्रद्धालु उनकी एक झलक पाकर धन्य हो गए थे। यात्रा के दौरान जय जगन्नाथ- हरि बोल के जय घोष से आसमान गूंज उठा था। रथ यात्रा के समापन पर इस्कॉन इंदौर के महा मनदास आदि संतों ने प्रवचन दिए।

झूमते-नाचते चल रहे थे श्रद्धालु

श्री जगन्नाथ रथ यात्रा समिति के अरुण सिंह किलेदार एवं राजेश आहूजा ने बताया कि माता मंदिर गंज से शाम चार बजे भगवान जगन्नाथ की पवित्र रथ यात्रा प्रारंभ हुई, तो पूरा क्षेत्र भक्ति के माहौल में डूब गया था। इसके पूर्व यहां पहुंचे इस्कॉन इंदौर के महा मनदास ने फूलों से सजे-धजे रथ में विराजमान भगवान जगन्नाथ, बड़े भाई बलभद्र एवं बहन सुभद्रा की पूजा-अर्चना के साथ आरती संपन्न कराई बाजे-गाजे के साथ प्रारंभ हुई रथ यात्रा में इस्कॉन इंदौर की दस सदस्यीय टीम मृदंग एवं



मजीरे बजाकर भगवान कृष्ण के भजन गाते चल रहे थे वहीं श्रद्धालु अपने को भी भक्ति भाव में लीन कर डीजे पर बज रहे भजन जगन्नाथ जगन्नाथ चक्का नैन, नीलाचल वाले, तू ना संभाले तो हमें कौन संभाले पर नाचते-गाते चल रहे थे। श्रद्धालु यात्रा के दौरान जय जगन्नाथ हरि बोल के जय घोष लगा रहे थे। उन्होंने बताया कि रथ को खींचने के लिए

महिला, पुरुषों के अलावा बच्चे भी काफी उत्सुक थे।

रथ का जगह-जगह हुआ भव्य स्वागत

आयोजन समिति से जुड़े योगी खंडेलवाल एवं जैमिन पटेल ने बताया कि रथ यात्रा कांतिशिवा चौक, दिल बहार चौक, मस्जिद

चौक, एचडीएफसी बैंक से तांगा स्टैंड चौक से होते हुए आदित्य हॉड शोरूम के सामने से निकलकर शाम करीब पांच बजे रामकृष्ण बगिया पहुंची। इन मार्गों में श्रद्धालुओं ने रथ यात्रा का जगह-जगह फूल मालाओं से स्वागत किया। रथ यात्रा में शामिल श्रद्धालु रथ खींचकर भगवान जगन्नाथ, बलभद्र एवं सुभद्रा के दर्शन पाकर अभिभूत हो गए थे. उन्होंने बताया कि विभिन्न सामाजिक संगठनों, जनप्रतिनिधियों, व्यापारियों एवं गणमान्य नागरिकों ने रथयात्रा का आत्मीयता के साथ जोरदार स्वागत किया।

बनी परंपरा आगे भी जारी रहेगी

आयोजन से जुड़े हेमंत पगारिया, अतुल पगारिया एवं रामानुज माहेश्वरी ने बताया कि रथ यात्रा के आयोजन पर इस्कॉन इंदौर से मार्गदर्शन लेकर करीब एक माह से तैयारी चल रही थी। जन सहयोग से सफल हुई रथ यात्रा की परंपरा को आगे भी बनाए रखने का समिति ने निर्णय लिया है। यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं खासकर महिलाओं, बच्चों एवं बुजुर्गों को असुविधा नहीं हो इसको लेकर गंभीरता के साथ पूरी सावधानी बरतने से यात्रा में किसी को भी दर्शन करने एवं रथ खींचने में असुविधा नहीं हुई, उन्होंने जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन एवं यातायात पुलिस के प्रति व्यवस्था बनाने में मिले सहयोग एवं धर्मप्रेमी नागरिकों के प्रति अपार स्नेह के प्रति आभार माना। भगवान जगन्नाथ की यात्रा के दौरान सेवाभावी लोगों ने श्रद्धालुओं के लिए जगह जगह फलों,स्वल्पाहार एवं चाय के स्टाल लगाए थे। यहां रथ के पहुंचने पर भगवानों का फूलों से स्वागत भी किया गया।

आंगन में घूम रहे तेंदुआ को कुत्ता समझ बुजुर्ग महिला ने बाहर से लगाई कुंडी वन विभाग ने सुरक्षित रेस्क्यू ऑपरेशन किया



मंडला (नप्र)। मध्य प्रदेश के मंडला जिले में कान्हा टाइगर रिजर्व के बफर जोन से लगे एक गांव में शुक्रवार सुबह उस समय हड़कंप मच गया जब एक तेंदुआ सीधा एक ग्रामीण के घर के अंदर जा घुसा। लेकिन मौके पर मौजूद 65 साल की बुजुर्ग महिला गींडिया बाई अहिरवार ने गजब की हिम्मत और सूझबूझ का परिचय दिया, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया। महिला ने खतरे को भांपते हुए बिना धबराए तेंदुए को कमरे के अंदर ही बंद कर दिया और तुरंत पड़ोसियों व वन विभाग को सूचना दी, जिसके बाद सुरक्षित रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया गया।

यह घटना शुक्रवार सुबह करीब 7~30 बजे कान्हा टाइगर रिजर्व के सिझौरा बफर जोन के पास स्थित खटोला गांव की है। गींडिया बाई अपने घर के आंगन में काम कर रही थीं, तभी उन्हें अंदर किसी जानवर के घुसने की आहट सुनाई दी। उन्होंने अधिकारियों को बताया कि शुरुआत में उन्हें लगा कि कोई कुत्ता अंदर आया होगा, लेकिन जब उन्होंने अंदर जाकर देखा तो उनके होश उड़ गए क्योंकि सामने एक तेंदुआ खड़ा था।

बिना धबराए बाहर से लगाई कुंडी

तेंदुए को सामने देखने के बावजूद गींडिया बाई ने

हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने बेहद शांति से काम लिया और चुपचाप बाहर निकलकर मुख्य दरवाजे की कुंडी बाहर से लगा दी। इसके बाद उन्होंने तुरंत आसपास के लोगों और ग्रामीणों को इस बात की जानकारी दी।

आसपास के लोगों को सुरक्षित जगह पर हटाया

घर के अंदर तेंदुए की मौजूदगी पुख्ता होने के बाद अधिकारियों ने विशेषज्ञों की मदद से उसे ट्रैकुलाइज किया। कड़ी मशकत के बाद वन विभाग की टीम ने तेंदुए को सुरक्षित रेस्क्यू कर लिया, जिससे ग्रामीणों ने राहत की सांस ली।

बुजुर्ग महिला की तारीफ कर रहे ग्रामीण

सुबह-सुबह हुई इस घटना के बाद से पूरे इलाके में बुजुर्ग महिला गींडिया बाई की बहादुरी की चर्चा हो रही है। अगर महिला थोड़ी भी धबरा जाती या शोर मचाती, तो तेंदुआ हमला कर सकता था। लेकिन उनकी तत्परता के कारण न सिर्फ उनकी जान बची, बल्कि वन्यजीव का भी सुरक्षित रेस्क्यू संभव हो सका।

एक बार फिर धीमी पड़ी मानसून की रफ्तार



बैतूल। जिले में मानसून की रफ्तार एक बार फिर धीमी पड़ गई है। पिछले सोमवार 20 जुलाई से शनिवार 25 जुलाई तक पांच दिनों में जिले में औसतन केवल 20.5 मिमी वर्षा दर्ज हुई है। इस दौरान 20 जुलाई को 15.8 मिमी, 21 जुलाई को 3.1 मिमी, 23 जुलाई को 12.5 मिमी, 24 जुलाई को 0.5 मिमी और 25 जुलाई को केवल 1.1 मिमी बारिश हुई। पिछले चार दिनों से अधिकांश क्षेत्रों में बारिश लगभग थमी हुई है। इससे दिनभर उमस बढ़ गई है और लोग गर्मी से परेशान हैं। 25 जुलाई तक जिले में कुल औसत वर्षा 338.7 मिमी दर्ज की गई है। जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि तक 398.7 मिमी वर्षा हो चुकी थी। यानी इस वर्ष अब तक 60 मिमी कम बारिश हुई है। वहीं जिले की औसत सामान्य वार्षिक वर्षा 1083.9 मिमी है। इसके मुकाबले अब तक केवल 338.7 मिमी बारिश हुई है, यानी अभी भी 745.2 मिमी वर्षा की कमी बनी हुई है। हालांकि मानसून का बड़ा हिस्सा अभी बाकी है। बारिश रुकने से हवा में नमी बढ़ गई है। सुबह और शाम के प्रथम उमस अधिक महसूस की जा रही है, जबकि दिन में बादल छाने के बावजूद तेज धूप निकलने से चिपचिपी गर्मी लोगों को परेशान कर रही है। मौसम विभाग के अनुसार बैतूल में अगले सात दिनों तक आसमान में बादल छाए रहने, गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम बारिश की संभावना बनी हुई है। 28 से 30 जुलाई के बीच वर्षा की गतिविधियों में बढ़ोतरी हो सकती है। फिलहाल अधिकतम तापमान 27 से 30 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 22 से 24 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने का अनुमान है। मध्य प्रदेश में सक्रिय मानसून तंत्र के कारण कई जिलों में बारिश की संभावना जताई गई है, जिससे बैतूल में भी सप्ताह के दूसरे हिस्से में अच्छी वर्षा की उम्मीद है।

आयुष विभाग ने 455 गर्भवतियों का कराया गर्भ संस्कार

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत जिले के 14 केंद्रों पर हुआ आयोजन



बैतूल। गर्भवती महिलाओं और गर्भस्थ शिशु के समग्र स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के उद्देश्य से आयुष विभाग द्वारा जिले में गर्भ संस्कार कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। शनिवार को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत जिले के सभी 10 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों सहित कुल 14 केंद्रों पर आयोजित कार्यक्रम में 455 गर्भवती महिलाओं को गर्भ संस्कार कराया गया। कार्यक्रम कलेक्टर के नेतृत्व और जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर के मार्गदर्शन में गठित आयुष चिकित्सकों की टीम द्वारा आयोजित किया जा रहा है। प्रत्येक माह की 9 और 25 तारीख को होने वाले इस कार्यक्रम में गर्भवती महिलाओं को गर्भ संस्कार के महत्व, मातृ स्वास्थ्य तथा गर्भस्थ शिशु के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास पर इसके सकारात्मक प्रभावों की जानकारी दी जाती है। आयुर्वेद के अनुसार गर्भवस्था के दौरान मां के विचार, भावनाएं, आहार और दिनचर्या का सीधा असर गर्भस्थ शिशु के विकास पर पड़ता है। विभाग के अनुसार गर्भ संस्कार तनाव और चिंता कम करने, सकारात्मक मानसिक स्थिति बनाए रखने तथा प्रसव को सहज बनाने में भी सहायक है।

रीवा में मूसलाधार बारिश के बाद ढहा आशियाना, घर का सारा सामान मलबे में दबा; मुआवजे की गुहार

रीवा (नप्र)। मध्य प्रदेश के रीवा जिले में पिछले दो दिनों से जारी मूसलाधार बारिश अब लोगों के लिए आफत बनती जा रही है। बारिश के इस कहर ने ल्यौथर तहसील के अमाव गांव में एक परिवार का आशियाना उजाड़ दिया। लगातार हो रही भारी बारिश के चलते राजभान तिवारी का कच्चा-पक्का मकान अचानक भरभराकर ढह गया। गनीमत यह रही कि हादसे से ठीक पहले परिवार के सदस्य सूझबूझ दिखाते हुए घर से बाहर निकल आए, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया और किसी की जान नहीं गई। हालांकि, इस दर्दनाक हादसे में मकान पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया है और घर के अंदर रखा सारा घरेलू सामान, राशन और जरूरत की चीजें मलबे के नीचे दब गई हैं। मकान गिरने के बाद अब इस परिवार के सामने सबसे

बड़ा संकट सिर छिपाने की जगह का बन गया है। लगातार हो रही बारिश के बीच बेघर हुए इस परिवार के पास अब रहने के लिए कोई सुरक्षित ठिकाना नहीं बचा है, जिससे उन्हें खुले आसमान के नीचे या रस्तेदारों के यहां शरण लेने को मजबूर होना पड़ रहा है।

प्रशासन से मुआवजे और तत्काल मदद की गुहार- घटना के बाद पीड़ित राजभान तिवारी और स्थानीय ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से तत्काल नुकसान का सर्वे कराने की मांग की है। ग्रामीणों का कहना है कि क्षेत्र में हो रही लगातार बारिश के कारण कई अन्य कच्चे मकानों को भी आंशिक नुकसान



नगरपालिका ने कारगिल चौक से हटाया अतिक्रमण हाईमास्ट लाइट, नए सेंटर प्वाइंट और यात्री सुविधाओं के साथ संवरेगा चौराहा



बैतूल। शहर के प्रमुख कारगिल चौक का स्वरूप जल्द ही पूरी तरह बदल जाएगा। नगर पालिका ने चौक के सौंदर्यीकरण की योजना पर काम शुरू कर दिया है। इसी क्रम में शुक्रवार को नगर पालिका के अमले ने मौके पर पहुंचकर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की। चौक के आसपास से लगभग आठ से दस घुमटियां हटाई

गईं, जबकि फल विक्रेताओं को व्यवस्थित स्थान पर स्थानांतरित किया गया। नगर पालिका के अनुसार, कारगिल चौक का मौजूदा सेंटर प्वाइंट भी बदला जाएगा। नया सेंटर गंज रोड की ओर स्थानांतरित किया जाएगा। अधिकारियों ने इसके लिए मौके पर माप-जोख भी किया है। चौक का विकास नए लेआउट के अनुसार किया

जाएगा। सौंदर्यीकरण योजना के तहत चौक पर हाईमास्ट लाइट लगाई जाएगी, जिससे पूरे क्षेत्र में बेहतर रोशनी सुनिश्चित होगी। यात्रियों के बैठने के लिए दस सेंच स्थापित की जाएंगी। चौक की सुरक्षा और सुंदरता बढ़ाने के लिए बोलाई लाइटें लगाई जाएंगी और लगभग दो फुट आठ इंच आकार के बड़े सजावटी गमले भी रखे जाएंगे। कारगिल स्मारक (मिसाइल) को भी आकर्षक रूप देने की तैयारी है। स्मारक पर फोकस लाइटें लगाई जाएंगी, जिससे रात के समय इसकी भव्यता बढ़ेगी। साथ ही पूरे स्मारक का रंग-रौंगन भी कराया जाएगा। नगर पालिका अधिकारियों के अनुसार, इस कार्य का वर्क ऑर्डर जारी हो चुका है। कारगिल चौक के सौंदर्यीकरण का काम एक निजी कंपनी को सौंपा गया है, जो शहर के अन्य सौंदर्यीकरण कार्यों को भी अंजाम दे रही है। नगर पालिका का कहना है कि अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई सौंदर्यीकरण परियोजना का पहला चरण है। निर्माण कार्य पूरा होने के बाद कारगिल चौक अधिक व्यवस्थित, आकर्षक और यात्री सुविधाओं से युक्त दिखाई देगा। बदले हुए सेंटर प्वाइंट और आधुनिक प्रकाश व्यवस्था से चौक की पहचान भी नए स्वरूप में सामने आएगी।

राम-जानकी मंदिर से बहुधा जगन्नाथ रथयात्रा में जगन्नाथ, बलभद्र, बहिन सुभद्रा अपने घर मिश्र जी मंदिर लौटे

सोहागपुर। विगत दिनों मिश्र जी मंदिर निकली जगन्नाथ रथयात्रा में भगवान् जगन्नाथ, बलभद्र बहिन सुभद्रा ने कुछ दिन रामगंज के राम-जानकी मंदिर में रुकने के उपरांत शुक्रवार को भगवान् अपने घर लौटते समय जगन्नाथ रथयात्रा का लोगों ने जगह-जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। रथयात्रा रामगंज निकलकर राज्य मार्ग पेट्रोल पंप चौराहा, न्यायालय चौराहा पलकमती नदी पुल, मुख्य बाजार, पुराने पुलिस थाने, कन्या शाला, बिहारी चौक से होकर पुनः मिश्र जी के मंदिर पहुंची। शारदा सेवा संघ के तत्वावधान में निकली। जगन्नाथ रथयात्रा में पंडित प्रकाश मनमोहन मुद्गल प्रदेश भाजपा कार्यकारिणी सदस्य सुश्री राजो मालवीय,वरिष्ठ समाजसेवी कन्नूलाल अग्रवाल, पूर्व नपाध्यक्ष संतोष मालवीय, जगदीश भावसार,माधव भावसार, समाजसेवी हरगोविंद सिंह पुरबिया, नगर



पंचायत परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटेल,पूर्व पार्षद लक्ष्मी नारायण सोनी,अश्वनी सरोज, विजय छबड़िया नन्नु भैया,आकाश

रघुवंशी वकील प्रांजल तिवारी, सेवानिवृत्त फौजी नीलम पटेल, सेवानिवृत्त फौजी अजय सोनी नीरज चौधरी, गोलू सोनी, सेवादल के इरफान

खान सुन्दर चौधरी, सहित मातृशक्ति एवं गणमान्य नागरिकों के अलावा धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं शामिल थे। इस रथयात्रा की उल्लेखनीय बात यह थी कि एक वाहन के के अन्दर बैठे युवक श्रद्धालुओं को वितरण करते चल रहे थे। लेकिन उससे बड़ी उल्लेखनीय बात यह रथयात्रा में प्रसाद आदिवासी अंचलों से लाए गए खारा के हरे पत्तों में दिया जा रहा था। जो कहीं न कहीं पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता रहा। वहीं रथयात्रा में धार्मिक उद्बोध होता रहा कि नीलांचल वाले मेरी नैया है तो हवाले,तू न संभाले तो कौन संभाले। वहीं पूर्व फौजी अजय सोनी शंख ध्वनि करते रथयात्रा में चल रहे थे। यह भी उल्लेखनीय है कि रथयात्रा में मातृशक्ति की लाल एवं पीली साड़ियां पहने हुई थीं। इसके की मातृशक्ति पगड़ी धारण किए हुई थीं। वहीं एक युवती पगड़ी पहनकर घोड़े पर सवार होकर रथयात्रा में चल रही थीं।

‘वाराणसी’ के कैनवास पर प्रियंका की वापसी

वैश्विक मंच पर अपनी प्रतिभा का परचम लहराने के बाद भारतीय सिनेमा में वापसी कर रही प्रियंका चोपड़ा अपनी आगामी मेगा-बजट एक्शन-एडवेंचर फिल्म ‘वाराणसी’ को लेकर बेहद उत्साहित हैं। मास्टर-स्टोरीटेलर एसएस राजामौली के निर्देशन में बन रही इस महत्वाकांक्षी परियोजना को प्रियंका ने अपने करियर का सबसे अनूठा और बड़ा प्रोजेक्ट बताया है। लगभग 14 महीनों से लगातार इस फिल्म की शूटिंग में व्यस्त प्रियंका का कहना है कि जिस तरह का विजन और भव्य कल्पना शक्ति राजामौली के पास है, वैसा अनुभव उन्हें अब तक के करियर में कभी नहीं मिला।



फिल्म से जुड़ी नई जानकारीयों और सामने आई नई झलकियों के अनुसार, ‘वाराणसी’ एक टाइम-ट्रैवल आधारित वैश्विक एक्शन-एडवेंचर है, जो पौराणिक गाथाओं और आधुनिक विज्ञान-रोमांच का संगम प्रस्तुत करती है। यह कहानी केवल भारत की पवित्र नगरी वाराणसी तक सीमित न रहकर अफ्रीका, अंटार्कटिका और विभिन्न महाद्वीपों तक की यात्रा कराती है। फिल्म में प्रियंका चोपड़ा ‘मंदाकिनी’ नाम का एक शक्तिशाली और बहुआयामी किरदार निभा रही हैं, जो बोलूड, एक्शन-ओरिएंटेड और बेहद निख अंदाज में पर्दे पर नजर आएगा। हाल ही में सामने आई तस्वीरों में प्रियंका के दो एकदम अलग रूप देखने को मिले हैं, एक तरफ जंगलों के बीच उनका बेपरवाह और ऊर्जवान अवतार, वहीं दूसरी ओर ब्लैक आउटफिट में उनका बेहद गंभीर, तीखा और स्टनिंग एक्शन लुक। हाल ही में अपनी तैयारियों और शूटिंग के अनुभवों को साझा करते हुए प्रियंका ने मजाकिया लहजे में बताया कि फिल्म में उन्होंने कई शानदार स्लो-मोशन जंप्स और उच्च स्तरीय एक्शन सीक्वेंस किए हैं, जो उनके लिए एक बिल्कुल नया अनुभव रहा। इसके साथ ही उन्होंने भारतीय सिनेमा में वापसी के अवसर पर निर्देशक से एक भव्य और यादगार डांस नंबर शामिल करने की गुजारिश की थी। खबरें हैं कि राजामौली ने उनकी इस मांग को पूरा करते हुए महेश बाबू और प्रियंका के साथ एक विशाल और ऊर्जा से भरपूर डांस सीक्वेंस भी फिल्माया है।



मायनों में भारतीय सिनेमा के नए रिकॉर्ड गढ़ने जा रही है। यह न केवल भारत की पहली बालिक गैर-अंग्रेजी भाषा की ऐसी पहली अंतरराष्ट्रीय फिल्म है जिसे विशेष रूप से 1.43:1 आईमैक्स फॉर्मेट में शूट किया जा रहा है। फिल्म का संगीत ऑस्कर

विजेता एमएम कीरावनी तैयार कर रहे हैं।

कास्टिंग की बात करें तो ‘वाराणसी’ में प्रियंका चोपड़ा के साथ साउथ सुपर स्टार महेश बाबू ‘रुद्र’ के मुख्य किरदार में हैं, जो त्रेता युग से लेकर कलयुग तक की समय-यात्रा से जुड़ी इस कहानी का केंद्र हैं। वहीं मलयालम सिनेमा के दिग्गज अभिनेता पृथ्वीराज सुकुमारन इस महागाथा में ‘कुंभ’ नामक एक बेहद खतरनाक और ताकतवर खलनायक की भूमिका निभा रहे हैं।

फिल्म के प्रमुख और चुनौतीपूर्ण एक्शन दृश्यों का शेड्यूल सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है तथा शेष हिस्सों की शूटिंग इस वर्ष के अंत तक समेटने की योजना है, जिसके बाद इसके जटिल विजुअल इफेक्ट्स (वीएफएक्स) और पोस्ट-प्रोडक्शन का काम शुरू होगा। राजामौली का विशाल विजन, महेश बाबू-प्रियंका चोपड़ा की पहली ऑनस्क्रीन जोड़ी और टाइम-ट्रैवल का अनोखा कॉन्सेप्ट इस फिल्म को वर्ष 2027 की सबसे बहुप्रतीक्षित वैश्विक रिलीज बनाता है।

‘सैयारा’ के बाद अब अहान पांडे की नई उड़ान

ब्लॉकबस्टर फिल्म ‘सैयारा’ की ऐतिहासिक सफलता के बाद बॉलीवुड के नए ओवरनाइट सेंसेशन अहान पांडे एक बार फिर पर्दे पर तहलका मचाने के लिए तैयार हैं। ‘सैयारा’ के बाद वह अगली बड़ी फिल्म यशराज फिल्म्स के बैनर तले कर रहे हैं। अनटाइटल्ड फिल्म का निर्देशन अली अब्बास जफर कर रहे हैं। इस रोमांटिक-एक्शन ड्रामा फिल्म की रिलीज डेट लॉक कर दी गई।



पांचवीं फिल्म होगी। आदित्य और अली इससे पहले साथ में मेरे ब्रदर की दुल्हन, गुंडे, सुल्तान और ‘टाइगर जिंदा है’ जैसी फिल्मों में साथ काम कर चुके हैं। इनमें गुंडे, सुल्तान और ‘टाइगर जिंदा है’ बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफल साबित हुईं। पिछले कुछ महीनों से फिल्म की शूटिंग यूनाइटेड किंगडम में चल रही है। शूटिंग के दौरान सेट से कई तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए, जिससे फिल्म को लेकर दर्शकों की एक्साइटमेंट और बढ़ गई।

इस साल की शुरुआत में आई खबरों के अनुसार, अशनीर ग़ोवर की चर्चित और विवादित जिंदगी पर बनने वाली इस फिल्म में आमिर खान मुख्य भूमिका निभाने वाले थे। जबकि, श्रद्धा कपूर फोमेल लोड के तौर पर चुनी गई थीं। नई रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि आमिर खान और निर्देशक

विविध

रियल बॉक्स

‘ओटीटी’ के चौखट पर सितारों का जमघट

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंटीर के स्थानीय संपादक हैं।



भारतीय मनोरंजन के इतिहास में पिछला कुछ समय बदलाव की एक ऐसी आंधी लेकर आया, जिसने पारंपरिक सिनेमा की दीवारों को हिलाकर रख दिया। इस बदलाव का केंद्र बिंदू बना डिजिटल प्लेटफॉर्म, जिसे आम बोलचाल में ‘ओवर द टॉप’ यानी ‘ओटीटी’ कहा जाता है। इसने न केवल दर्शकों के मनोरंजन का अंदाज बदला, बल्कि दर्शकों से चले आ रहे उस तिलिस्म को भी तोड़ दिया जिसे ‘स्टारडम’ कहा जाता था। यह मनोरंजन की दुनिया में एक युगांतरकारी और क्रांतिकारी घटना है। यही वजह है कि आज फिल्मों से ज्यादा वेब सीरीज पसंद की जा रही है। लोकप्रियता का प्रमाण यह है कि सिनेमा के बड़े सितारे भी ओटीटी की चौखट पर लाइन लगाकर खड़े हैं।

मनोरंजन की दुनिया में ओटीटी (ओवर द टॉप) बड़ा बदलाव है। इसकी नींव उस दौर में पड़ी, जब पूरी दुनिया एक अनचाहे संकट से जुड़ा रही थी। कोरोना महामारी के उस भयावह काल में जब लोग अपने घरों में बंद होने को मजबूर थे, सिनेमाघर बंद हो चुके थे। अनिश्चितता के उस माहौल में मानसिक शांति और मनोरंजन के लिए लोगों के पास केवल मोबाइल फोन और टीवी स्क्रीन ही सहाय थीं। संकट के इस दौर में डिजिटल प्लेटफॉर्म ने अपनी उपस्थिति को मजबूती से दर्ज कराया। जो दर्शक पहले केवल ढाई घंटे की मसाला फिल्मों के आदी थे, उन्हें घर बैठे ऐसी कहानियों का स्वाद चखने को मिला। हर समाह नई कहानियाँ, नए विषय और बिना किसी विज्ञापन के निरंतर चलने वाले मनोरंजन ने दर्शकों को अपनी ओर ऐसा आकर्षित किया कि देखते ही देखते यह प्लेटफॉर्म दर्शकों का चहेता बन गया। कोरोना काल भीतने के बाद भी दर्शकों की यह आदत नहीं बदली, बल्कि इसने पारंपरिक सिनेमा के एकाधिकार को हमेशा के लिए चुनौती दे दी।

एक समय था जब बड़े पर्दे के कलाकारों के लिए टेलीविजन या किसी छोटे माध्यम पर काम करना उनके स्तर से नीचे माना जाता था। लेकिन, डिजिटल प्लेटफॉर्म की बढ़ती ताकत और इसकी पहुंच ने इस धारणा को पूरी तरह बदल दिया। आज स्थिति यह है कि सिनेमा के बड़े-बड़े अभिनेता और अभिनेत्रियाँ इस नए माध्यम की वेब सीरीज में काम करने के लिए लालायित दिखाई देने लगे। इसकी शुरुआत तब और बड़ी हो गई जब सैफ अली खान जैसे स्थापित अभिनेता ने ‘सेक्रेड गेम्स’ और अब ‘तांडव’ जैसी वेब सीरीज में मुख्य भूमिका निभाकर सबको चौंका दिया। इसके बाद तो जैसे बॉलीवुड के दिग्गजों की कतार लग गई। अनिल कपूर ने ‘द नाइट मैनेजर’ जैसी चर्चित श्रृंखला में अपनी अदाकारी का जलवा बिखेरा, तो वहीं धक-धक गर्ल कही जाने वाली माधुरी दीक्षित ने ‘द कम गेम’ और ‘मिसेज

देशपांडे’ के बाद ‘मां बहन’ के जरिए इस डिजिटल दुनिया में कदम रखा। इन बड़े नामों के अलावा भी अजय देवगन ने ‘रुद्र’ और शाहिद कपूर ने ‘फर्जी’ जैसी वेब सीरीज से दर्शकों के दिलों पर राज किया। यह बदलाव इस बात का सबूत है कि अब कलाकार पर्दे के आकार से नहीं, बल्कि कहानी की गहराई और उसकी पहुंच से अपनी सफलता को आंक रहे हैं।

इस पूरे परिदृश्य का सबसे खूबसूरत पहलू यह रहा कि इसने सिनेमा की उस वंशवादी और नेपोटिज्म की व्यवस्था पर जमकर चोट की, जहां केवल कुछ खास चेहरों को ही बड़े अवसर मिलते थे। ओटीटी ने पूरी तरह से योग्यता और प्रतिभा को तरजीह दी। इसके फलस्वरूप ऐसे कलाकारों का उदय हुआ, जो आज लोकप्रियता के मामले में किसी भी बड़े फिल्मी सितारे से कम नहीं हैं, बल्कि कई मायनों में उनसे कहीं आगे निकल चुके हैं। इस सूची में सबसे पहला नाम पंकज त्रिपाठी का आता है। ‘मिर्जापुर’ जैसी वेब सीरीज में कालीन भैया के उनके किरदार ने उन्हें घर-घर में एक घरेलू नाम बना



दिया। मनोज बाजपेयी यूं तो सिनेमा में वर्षों से सक्रिय थे, लेकिन ‘द फैमिली मैन’ के श्रीकांत तिवारी के रूप में उन्हें जो देशव्यापी और वैश्विक लोकप्रियता मिली, वह अभूतपूर्व थी। इसके बाद उन्होंने कई वेब सीरीज में काम किया। इसी तरह ‘स्कैम 1992’ के जरिए प्रतीक गांधी ने हर्षद मेहता के किरदार में जो जान फूँकी, उसने रातों-रात उन्हें भारतीय मनोरंजन उद्योग का एक बड़ा चेहरा बना दिया। नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने भी ‘सेक्रेड गेम्स’ के राणेश गायतोंडे के रूप में जो पहचान बनाई, उसने गणेश कर दिया कि दर्शक अब शक्ल-सूरत से ज्यादा अभिनय की ताकत को सलाम करते हैं। जितेंद्र कुमार ने ‘पंचायत’ के सचिव जी और ‘कोटा फैक्ट्री’ के जीतू भैया के रूप में आम मध्यमवर्गीय युवाओं के दिलों में वह जगह बनाई जो शायद बड़े पर्दे के रोमांटिक हीरो भी नहीं बना पाते। डिजिटल प्लेटफॉर्म की एक और बड़ी विशेषता यह रही कि इन्होंने केवल काल्पनिक अपराध या थ्रिलर कहानियाँ ही नहीं दिखाईं, बल्कि देश के गौरवशाली इतिहास और यहां के औद्योगिक विकास की सच्ची कहानियों को भी पूरी संजीदगी से पर्दे पर उतारा है। इस कड़ी में एक नई और बेहद चर्चित वेब सीरीज सामने आई, जिसका नाम है

मनबाया। इन सभी श्रृंखलाओं की सफलता यह दर्शाती है कि डिजिटल मंचों ने केवल समय काटेने का जरिया नहीं दिया, बल्कि दर्शकों को उत्कृष्ट सिनेमा के अनुभव का हिस्सा बनाया है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म ने स्टारडम को खत्म नहीं किया, बल्कि उसने स्टारडम की पुरानी और रूढ़िवादी परिभाषा को भी पूरी तरह बदल दिया है। पहले स्टारडम का मतलब केवल एक आकर्षक चेहरा, बड़े बजट की एक्शन फिल्में और सिनेमाघरों के बाहर लगने वाली कतार होता था। आज स्टारडम का मतलब बेहतरीन अदाकारी, सशक्त संवाद और दर्शक के दिल को छू लेने वाली प्रासंगिक कहानियाँ हैं। इस माध्यम ने पारंपरिक बड़े फिल्मी सितारों को आत्मनिरीक्षण करने और अपनी अभिनय क्षमता को निखारने पर मजबूर किया, तो वहीं दूसरी तरफ बिना किसी गोंडफादर के आए प्रतिभावान कलाकारों को एक ऐसा प्लेटफॉर्म दिया, जहां वे अपनी कला के दम पर चमक रहे हैं। मनोरंजन की दुनिया में आया यह बदलाव पूरी तरह से प्रगतिशील और क्रांतिकारी है, जिसने दर्शकों को राजा बना दिया है और अभिनय को ही एकमात्र कसौटी घोषित कर दिया है।

- hemantpal60@gmail.com / 9755499919

अशनीर की बायोपिक से बाहर हुए आमिर खान

बॉलीवुड के मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान को लेकर एक बड़ी खबर सामने आ रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, आमिर खान ने ‘भारत-पे’ के पूर्व सह-संस्थापक अशनीर ग़ोवर के जीवन पर बनने वाली प्रस्तावित बायोपिक से अपने कदम पीछे खींच लिए। हालाँकि, इस विषय पर अभी तक आमिर खान, फिल्म के निर्देशक राहुल मोदी या निर्माताओं की ओर से कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई।

इस साल की शुरुआत में आई खबरों के अनुसार, अशनीर ग़ोवर की चर्चित और विवादित जिंदगी पर बनने वाली इस फिल्म में आमिर खान मुख्य भूमिका निभाने वाले थे। जबकि, श्रद्धा कपूर फोमेल लोड के तौर पर चुनी गई थीं। नई रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि आमिर खान और निर्देशक



के बीच फिल्म की स्क्रिप्ट और क्रिएटिव विजन को लेकर सहमति नहीं बन सकी। आमिर खान कहानी को अपने नजरिए से और अधिक प्रभावशाली

बनाना चाहते थे, लेकिन बात न बनने पर उन्होंने प्रोजेक्ट से अलग होना ही बेहतर समझा।

अभिनेता के बाहर होने के बाद भी श्रद्धा कपूर इस प्रोजेक्ट से जुड़ी हुई हैं। बताया जा रहा है कि वे फिल्म में अशनीर ग़ोवर की पत्नी माधुरी जैन ग़ोवर की भूमिका निभा सकती हैं। इसके साथ ही चर्चा यह भी है कि श्रद्धा एक प्रमुख प्रोडक्शन हाउस के साथ मिलकर इस फिल्म के निर्माण का जिम्मा भी संभाल सकती हैं। आमिर खान के जाने के बाद अब मेकर्स अशनीर ग़ोवर के किरदार के लिए किसी युवा अभिनेता की तलाश में जुट गए हैं। जल्द ही नई स्टारकास्ट का ऐलान किया जा सकता है। शार्क टैंक इंडिया और ‘भारत-पे’ विवादों के बाद सुर्खियों में आए अशनीर ग़ोवर की जिंदगी पर आधारित इस बायोपिक को लेकर दर्शकों में उत्पुकता बरकरार है।

पर्दे पर संघर्ष, राजनीति और बदलाव की अधूरी कहानी



स्वतंत्रता संग्राम से लेकर जेपी आंदोलन, मंडल आंदोलन और आज के विश्वविद्यालयों में चल रहे विरोध प्रदर्शनों तक फैला हुआ है। इन आंदोलनों ने लोकतंत्र, शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक न्याय और राजनीतिक चेतना पर लगातार सवाल उठाए हैं। स्वाभाविक रूप से हिंदी सिनेमा ने भी समय-समय पर इन मुद्दों को अपने कथानक का हिस्सा बनाया है।

सुछात्र आंदोलनों पर बनी फिल्मों की संख्या बहुत अधिक नहीं है और जिन फिल्मों ने इस विषय को छुआ भी है, उनमें अधिकांश ने आंदोलन की पृष्ठभूमि का उपयोग तो किया, लेकिन उसके सामाजिक और वैचारिक पक्ष की गहराई तक कम ही पहुंच सकीं। हिंदी सिनेमा में छत्र आंदोलन कभी कॉलेज चुनावों के रूप में दिखाई देते हैं, कभी भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ युवाओं के विद्रोह के रूप में और कभी सामाजिक असमानता तथा आरक्षण जैसे संवेदनशील विषयों के संदर्भ में। इन फिल्मों में युवा ऊर्जा, आदर्शवाद और व्यवस्था से टकराने की बेचैनी तो दिखाई देती है, लेकिन बहुत कम फिल्में यह बताती हैं कि छत्र आंदोलन आखिर किस दिशा में समाज को ले जा सकते हैं।

भारतीय राजनीति में 1974 का जेपी आंदोलन छत्र शक्ति की सबसे बड़ी मिसाल माना जाता है। बरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार के खिलाफ शुरू हुआ यह आंदोलन बाद में आपातकाल के विरोध का बड़ा आधार बना। इस दौर ने देश की राजनीति को बदल दिया, लेकिन हिंदी सिनेमा ने इस ऐतिहासिक परिवर्तन को बहुत सीमित रूप में ही चित्रित किया। फिल्मकारों ने आंदोलन की वैचारिक जटिलताओं की बजाय उसकी राजनीतिक पृष्ठभूमि को अधिक महत्व दिया। यही कारण है कि छत्र राजनीति पर आधारित अधिकांश फिल्में किसी न किसी व्यक्तिगत संघर्ष या सत्ता संघर्ष तक सिमट जाती हैं।

राम गोपाल वर्मा की ‘शिवा’ इस विषय पर बनी सबसे प्रभावशाली फिल्मों में गिनी जाती है। कॉलेज-परिसर में बढ़ते अपराध, बाहुबल और राजनीतिक हस्तक्षेप को जिस यथार्थवादी शैली में फिल्म ने प्रस्तुत किया, उसने छत्र राजनीति की एक नई तस्वीर दर्शकों के सामने रखी। फिल्म का नायक किसी विचारधारा का प्रतिनिधि नहीं बनता, बल्कि वह हिंसा और अपराध से



मुक्त शैक्षणिक वातावरण की लड़ाई लड़ता है। यही कारण है कि ‘शिवा’ आज भी छत्र राजनीति पर बनी सबसे महत्वपूर्ण फिल्मों में शामिल की जाती है।

मणिरत्नम की ‘युवा’ ने छत्र आंदोलन को तीन



अलग-अलग युवाओं की जिंदगी के माध्यम से देखने का प्रयास किया। फिल्म में कोलकाता की छत्र राजनीति, सत्ता का हस्तक्षेप, भ्रष्टाचार और आदर्शवाद के बीच का संघर्ष दिखाई देता है। अजय देवगन, विवेक ओबेरॉय और अभिषेक बच्चन के किरदार अलग-अलग सामाजिक पृष्ठभूमियों से आते हैं, लेकिन अंततः राजनीति उन्हें एक साझा मोड़ पर ले आती है। फिल्म यह संकेत देती है कि राजनीति से दूरी बनाकर परिवर्तन संभव नहीं है, बल्कि व्यवस्था के भीतर रहकर भी बदलाव की कोशिश की जा सकती है। हालांकि फिल्म

विश्वविद्यालय की राजनीति और छत्र आंदोलनों की महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई देती है। छत्र नेतृत्व, चुनाव, जनसभाएं और किसानों के मुद्दों से जुड़ी राजनीति यह बताती है कि विश्वविद्यालय केवल शिक्षा के केंद्र नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रयोगशाला भी होते हैं। हालांकि वर्षों में आई ‘हुड़दंग’ ने मंडल आयोग के दौर और आरक्षण विरोधी आंदोलनों की पृष्ठभूमि में युवाओं की भावनाओं को चित्रित किया। फिल्म ने प्रेम कहानी के साथ सामाजिक समानता, अवसरों की असमानता और छत्र राजनीति के प्रभाव को जोड़ने का प्रयास किया। हालांकि इसकी प्रस्तुति व्यावसायिक फिल्मों के ढांचे से पूरी तरह बाहर नहीं निकल पाई। यदि छत्र आंदोलन के व्यापक अर्थ को समझना हो तो ‘श्री इंडियट्स’ का उल्लेख भी जरूरी है। यह फिल्म किसी राजनीतिक आंदोलन की कहानी नहीं कहती, लेकिन शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ छात्रों के मौन विद्रोह को बेहद प्रभावशाली ढंग से सामने लाती है। अंकों की दौड़, रटंत शिक्षा और रोजगार केंद्रित व्यवस्था पर सवाल उठाकर फिल्म बताती है कि परिवर्तन केवल सड़कों पर उतरने से नहीं, बल्कि सोच बदलने से भी आता है। इसी तरह ‘गम्बर इज बैक’ का नायक एक शिक्षक



है, जो भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष करता है। यद्यपि फिल्म सीधे छत्र आंदोलन पर आधारित नहीं है, लेकिन शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी के संबंध को रेखांकित

